इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD

आज़ादी का अमृत महोत्सव

इंड छवि

अंक : 21, जनवरी-मार्च 2022

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के कर कमलों से हिन्दी गृह पत्रिका "इंड छवि"
के विश्व हिन्दी दिवस विशेषांक का विमोचन

इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD

इंडियन बैंक

इंड छवि

अंक - 21, जनवरी-मार्च 2022

संपादक मण्डल

मुख्य संरक्षक

श्री शांति लाल जैन
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

संरक्षक

श्री वी वी शेणॉय : कार्यपालक निदेशक
श्री इमरान अमीन सिद्दीकी : कार्यपालक निदेशक
श्री अश्वनी कुमार : कार्यपालक निदेशक

उप संरक्षक

श्री धनराज टी. : महाप्रबंधक (सीडीओ/राभा)

संपादक

श्री अजयकुमार : सहायक महाप्रबंधक (राभा)

सह संपादक

भूपेश बारोट : प्रबंधक (राभा)

संपादन सहयोग

श्रीमती एम. सुमति : मुख्य प्रबंधक
श्री केदार पंडित : वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
सुश्री आलोचना शर्मा : वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
श्री इरफान आलम : वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
श्री चंदन प्रकाश मेंढे : वरिष्ठ प्रबंधक (राभा)
सुश्री श्वेता गंगिरेड्डी : प्रबंधक (राभा)
श्री सूर्यकांत त्रिपाठी निराला : प्रबंधक (राभा)

मुद्रक : आर एन ग्राफिक - 8010872289

पत्रिका में प्रकाशित लेखों एवं रचनाओं में व्यक्त विचार, लेखकों के अपने हैं। इंडियन बैंक का उनसे सहमत होना जरूरी नहीं है।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों/रचनाओं के लेखकों/रचनाकारों से मौलिकता प्रमाणपत्र प्राप्त कर लिया गया है।

अनुक्रमणिका

विषय — पृष्ठ संख्या

1. संदेश
   प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश
   सहायक महाप्रबंधक का संदेश
2. बैंक-अर्थव्यवस्था के आधार स्तम्भ 4
3. सोने की चिड़िया 5
4. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा का महत्व और विकास की संभावनाएं 6
5. हिंदी का राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर वर्चस्व 8
6. पंख 9
7. मल्टीप्लेक्स से मोबाइल तक का सफर 10
8. मैं हूँ बेटी 12
9. इंसान कैद मोबाइल के पिंजरे में, परिंदे आजाद खुले गगन में 13
10. संस्मरण 'झूठा-सच' 14
11. बैंकर के रूप में मेरी सेवा यात्रा 16
12. जब मयकदे से निकला मैं राह के किनारे: रांगेय राघव..19
13. कब तक 21
14. निकला है 21
15. मेरे पसंदीदा शिक्षक एवं मैं 22
16. विरह 23
17. नृत्य 23
18. आभासी दुनिया से मुक्ति 24
19. रानी की वाव 25
20. तारक मेहता की उल्टी बैलेंस शीट 28
21. पिता की सीख 32
22. आदमजात 35
23. प्रतीक्षा 36
24. विरोधाभास 37
25. पलंग 37
26. प्रेरणा 38
27. उर्मिला 39

सम्पर्क सूत्र :-
इंडियन बैंक, कॉर्पोरेट कार्यालय,
राजभाषा विभाग, 254-260, अव्वै षण्मुगम सालै,
रॉयपेट्टा, चेन्नै - 600 014
वेबसाइट : www.indianbank.co.in
ई-मेल : hoolc@indianbank.co.in

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी का संदेश ....

मेरे प्रिय साथियो,

'इंड-छवि' के इस नवीन अंक के माध्यम से आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है। आप सभी के सम्मिलित एवं समर्पित प्रयासों से बैंक प्रगति के पथ पर गतिमान है। एक टीम भावना के साथ कार्य करते हुए, हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचना है। हमारे सामने कई चुनौतियां हैं, जिनका हमें धैर्य एवं साहस के साथ सामना करना है और हमें अपने प्रयास निरंतर जारी रखने चाहिए, हम अवश्य सफल होंगे-

इस संदर्भ में कवि सोहनलाल द्विवेदी जी की प्रेरक पंक्तियां है -

"लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती"

उपरोक्त पंक्तियां, हमें नित आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। हमें जीवन के किसी भी क्षेत्र में आने वाली चुनौतियों से घबराना नहीं चाहिए तथा उनका डटकर सामना करते हुए, लगातार आगे बढ़ना चाहिए।

बैंकिंग क्षेत्र में लक्ष्यों का निर्धारण करके, उनके कार्यान्वयन हेतु प्रयास किए जाते हैं। कई क्षेत्रों में हमें श्रेष्ठ उपलब्धियां प्राप्त होती हैं एवं कभी-कभी कुछ कमियां भी रह जाती हैं। यदि हम केवल उपलब्धियों के विजयभाव या असफलता की निराशा में रहेंगें, तो आगे की प्रगति बाधित होगी। अतः हमें गत जीवन के अनुभवों को देखते हुए, नवीन लक्ष्यों का निर्धारण करना होगा तथा नवीन उर्जा व नवचेतना से आगे बढ़ना होगा।

बीते हुए दो वर्ष संपूर्ण मानव जाति के लिए संकटमय एवं चुनौतीपूर्ण रहे हैं। कोविड से जीवन का हर क्षेत्र प्रभावित हुआ था। ऐसे वातावरण में आप सभी कार्मिकों के निष्ठावान प्रयासों एवं समर्पित ग्राहक सेवाओं के कारण, एक संस्था के रूप में हमारा बैंक अडिग बना रहा। आप सभी का अप्रतिम साहस एवं प्रतिबद्धता बैंक को हर परिस्थिति में आगे भी अपने उच्चतम सोपानों पर बनाए रखेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

हमारा बैंक ग्राहक केन्द्रित डिजिटलीकरण की ओर बढ़ रहा है, जिससे भविष्य में ग्राहकों को विविध बैंकिंग सुविधाएं डिजिटल माध्यम से प्राप्त होंगी। हमारे बैंक ने हाल ही में "टैब बैंकिंग" की शुरूआत की है तथा हम डिजिटल लेंडिंग में भी आगे बढ़ रहे हैं। डिजिटलीकरण का उद्देश्य ग्राहकों को घर बैठे ही संपूर्ण बैंकिंग सुविधाएं उपलब्ध कराना है।

बैंकिंग क्षेत्र में, इन दिनों प्रतिस्पर्धा बहुत बढ़ चुकी है। प्रत्येक बैंक नए-नए प्रॉडक्ट बाजार में ला रहे हैं। हमें भी समय के साथ, बाजार एवं ग्राहकों की मांग के अनुरूप प्रॉडक्ट एवं सेवाएं प्रदान करनी होगी, तभी हम बाजार में प्रतिस्पर्धी बने रहेंगे। आज के बाजार में अपने आप को स्थापित करने के लिए हमें अपने प्रयास दुगुने करने होंगे।

हमें अपनी सेवाओं, उत्पादों एवं योजनाओं को आम जनता व ग्राहकों तक सुगमतापूर्वक ले जाना है। इस कार्य में हिन्दी व क्षेत्रीय भाषाएं एक सशक्त माध्यम हैं। बैंकिंग सेवाओं की प्रकृति अखिल भारतीय होती है तथा भारत की पहचान एक बहुभाषी एवं सामासिक संस्कृति वाले देश के रूप में है, अतः हमें अपनी सेवाएं व उत्पाद जनता की भाषा में उपलब्ध कराने के पूर्ण प्रयास करने होंगे। भाषा हमारे लिए एक बहुत बड़ा साधन है।

मुझे विश्वास है कि यदि बैंकिंग व्यवसाय में स्पष्ट लक्ष्यों, ठोस रणनीति एवं नवोन्मेषी प्रयासों से आगे बढ़ेंगे तो हम सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित कर सकेंगे।

मंगलकामनाओं के साथ।

शांति लाल जैन
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी

सहायक महाप्रबंधक का सन्देश ....

साथियों,

बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका "इंड-छवि" के नवीनतम अंक के साथ मैं एक बार फिर से आप सभी से संवाद स्थापित कर रहा हूँ।

साथियों, मानव जीवन कभी-भी आसान नहीं रहा है, यह हमेशा संघर्षमय एवं चुनौतीपूर्ण रहा है। हर युग में तत्कालीन संघर्षों की आग में तप कर ही मानवीय जीवन का स्वरूप स्वर्ण सा आलोकित हुआ है। मानव कठिन संघर्ष व अपने अदम्य साहस की बदौलत हर कठिन परिस्थिति पर विजय प्राप्त कर लेता है।

एक बैंकर के रूप में हमें भी नित-नए अनुभव एवं संघर्षों से गुजरना पड़ता है। इन्हीं संघर्षों पर विजय प्राप्त करके हम मानवीय एवं व्यावसायिक धरातल पर निखरते हैं। भाषा व साहित्य ने भी इन्हीं संघर्षों की दास्तां को हर युग तक पहुँचाया है तथा मानवीय जीवन को प्रेरणा व नई दिशा दी है। यह पत्रिका बैंककर्मियों के रचनात्मक विचार व सृजनात्मकता को प्रस्तुत करती है, ताकि वह अन्य सभी के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनें। भाषा हर युग में न केवल मानव की उन्नति एवं विकास का आधार रही है, बल्कि क्रान्ति की वाहक भी बनी है। भाषा एवं साहित्य सदियों से मानव जीवन के लिए प्रेरणा के स्त्रोत रहे हैं-

"मुझे तो अंधेरों में जलना भी आता है।
राह कितनी भी मुश्किल हो पर चलना भी आता है।।
कितने भी पत्थर बिछा दो तुम राहों में, कोई फर्क नहीं पड़ता,
क्योंकि मुझे गिरकर संभलना भी आता है।।"

आशा है, इस अंक में सम्मिलित की गई विषय सामग्री आपको रूचिकर लगेगी।

शुभकामनाओं के साथ।

अजयकुमार
सहायक महाप्रबंधक(राभा)

जिस देश को
अपनी भाषा और साहित्य के
गौरव का अनुभव नहीं है,
वह उन्नत नहीं हो सकता

-डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

बैंक-अर्थव्यवस्था के आधार स्तम्भ

ईशु गर्ग
सहायक प्रबंधक
सूरत गढ़ शाखा

देश में वित्तीय स्थिरता बनाए रखने में बैंक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये आपको अपने वित्त का बेहतर ढंग से प्रबंधन करने में आपकी सहायता करने के लिए कई सेवाएं प्रदान करते हैं। ये संस्थाएं समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

बैंकों के कार्यों को मोटे तौर पर दो श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। यह प्राथमिक और अतिरिक्त कार्य है। प्राथमिक कार्य के अंतर्गत बैंकों के मुख्य कार्य हैं जनता के जमा धन को स्वीकार करना और ऋण प्रदान करना।

जनता के जमा धन को बैंक द्वारा सम्बंधित व्यक्ति के नाम से खाता खोल कर सुरक्षित रखा जाता है।

बैंक द्वारा मुख्य रूप से चार प्रकार के खाते खोले जाते हैं।

1. **बचत खाते** - यह खाते जनता को पैसे बचाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इनमें पैसा आसानी से वापस लिया जा सकता है और बिना किसी प्रतिबंध के बचत खाते में जमा किया जा सकता है। इन खातों में ब्याज दर काफी कम है।

2. **चालू खाते** - यह खाते विशेष रूप से व्यवसायियों के लिए हैं। ये खाते ओवरड्राफ्ट सुविधा प्रदान करते हैं जो व्यवसाय के लिए फायदेमंद होते हैं। इस खाते में कोई ब्याज का भुगतान नहीं किया जाता है।

3. **मीयादी खाते / जमा** - इस खाते में एक निश्चित धनराशि निश्चित समय के लिए जमा की जाती है ऐसी जमा राशि में ब्याज दर अधिक होती है।

4. **आवर्ती खाते / जमा** - इस खाते में एक निश्चित राशि एक नियमित अंतराल पर जमा की जाती है। ब्याज दर उच्च होती है, हालांकि किसी निश्चित अवधि से पहले राशि वापस भी नहीं ली जा सकती है।

बैंकों में ऋण समयावधि के अनुसार अलग-अलग स्कीमों के अंतर्गत दिया जाता है। ऋणों पर लगाए गए ब्याज की दर विभिन्न प्रकार के ऋण के आधार पर अलग-अलग होती है। इसे किस्तों में चुकाया जा सकता है।

1. **नगद क्रेडिट** - ग्राहकों को एक निश्चित राशि की नगदी लेने की सुविधा है जो पैसों की सीमा में तय की गई है। इसके लिए एक अलग कैश क्रेडिट खाता बनाए रखा जाना चाहिए।

2. **ओवरड्राफ्ट** - यह सुविधा व्यापारियों के लिए है। इस प्रकार की सुविधा वर्तमान व्यापारी खाताधारकों को प्रदान की जाती है। इस सुविधा का लाभ लेने के लिए अलग खाता बनाए रखने की आवश्यकता नहीं है।

अतिरिक्त कार्य जिन्हें गैर बैंकिग कार्यों के रूप में भी जाना जाता है। यह दो प्रकार के होते हैं- एजेंसी कार्य और सामान्य उपयोगिता कार्य।

बैंक अपने ग्राहकों के लिए एक एजेंट के रूप में भी कार्य करता है। इस संस्था द्वारा कई एजेंसी कार्यों को अंजाम दिया जाता है। इसमें चेक का भुगतान, पोर्टफोलियो प्रबंधन, आर्थिक संग्रह और धन के हस्तांतरण का संग्रहण शामिल है। बैंक अपने ग्राहकों के लिए निष्पादक, प्रशासक, सलाहकार और न्यासी के रूप में भी कार्य करते हैं। वे अपने ग्राहकों को अन्य स्थानों से निपटने में मदद करते हैं।

बैंक सामान्य उपयोगिता कार्य भी करते हैं जिसमें लॉकर सुविधा, शेयरों का हिसाब किताब, विदेशी मुद्रा विनिमय का कार्य करना, क्रेडिट के पत्र और ड्राफ्ट जारी करना, परियोजना रिपोर्ट तैयार करना, सार्वजनिक कल्याण

अभियान और वयस्क साक्षरता कार्यक्रम जैसे कार्यक्रमों का उपक्रम भी है।

बैंक, व्यक्तियों और व्यवसायों से धन स्वीकार करते हैं और उद्योगों को ऋण देते हैं। इस प्रकार वे विभिन्न उद्योगों के विकास में सहायता करते हैं। ऋण को आसान किस्तों में चुकाया जा सकता है। बैंक कृषि और औद्योगिक क्षेत्रों के विकास और प्रगति के लिए ऋण प्रदान करते हैं। जैसे-जैसे इन क्षेत्रों का विस्तार होता है, वैसे-वैसे सार्वजानिक क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर पैदा होते हैं।

बैंक एक ऐसा संस्थान है जो जनता से धन जमा करता है और व्यक्तियों के साथ साथ फर्मों को भी धन उपलब्ध करवाता है। घर पर रखा धन सुरक्षित नहीं है इसकी चोरी होने का डर बना रहता है। जब आप अपने पैसे बैंक में रखते हैं तो बैंक की जिम्मेदारी इसकी रक्षा करना है, आपको इसकी सुरक्षा के बारे में चिंता करने की जरूरत नहीं है। बैंक समय पर विभिन्न योजनाओं की पेशकश करते हैं जिससे लोगों में बचत की आदतों को प्रोत्साहित किया जा सके। बैंक में जमा धन सुरक्षित ही नहीं है, बल्कि आप इसके पास से भी समय पर वापस लेने का विकल्प होता है। उन्नत बैंकिंग प्रणाली से कहीं भी धनराशि भेजना और प्राप्त करना संभव है।

बैंक किसी भी देश की अर्थव्यवस्था का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। आधुनिक बैंकिंग सेवाओं ने व्यापार, उद्योगों के विकास और अन्य गतिविधियों की प्रक्रिया को आसान बनाने में मदद की है, जो देश की अर्थव्यवस्था के विकास में मदद करते हैं। कृषि क्षेत्र, अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए विशेष बैंक हैं जो कम ब्याज पर किसानों को ऋण प्रदान करते हैं। बैंक और अन्य वित्तीय संस्थान व्यवसायों के विकास को बढ़ावा देते हैं और व्यक्तियों के धन और अन्य मूल्यवान संपत्तियों की रक्षा करते हैं। निश्चित रूप से बैंक किसी देश की अर्थव्यवस्था के विकास में एक अहम भूमिका निभाते हैं।

सोने की चिड़िया

स्नेह प्रताप
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, अहमदाबाद

विश्व पटल पर भारत की महिमा,
हर देशों से न्यारी है।

उत्तर में सरताज हिमालय,
दक्षिण में सागर सम्राट है।

उपजाऊ जमीन यहाँ पर,
नदियाँ, जहाँ की जीवन रेखा है।

इतनी सामर्थ्य है, इस मिट्टी में,
विश्व क्षुधा शांत हो सकती है।

भ्रष्टाचार, कालाधन मिट जाए अगर,
फिर दूध की नदियाँ यहाँ बह जाएंगी।

देशभक्ति की भावना जग जाए मन में,
फिर से सोने की चिड़िया हो जाएगी।

गुलामी में जितना व्यथित नहीं हुए,
सब देख, अब आँखे नम हो जाती हैं।

सपना देखे विश्व अग्रणी होने का तब,
निज स्वार्थ लोलुपता बाधा बनती है।

विश्व अग्रणी बनने की,
सारी क्षमता इस मिट्टी में है।

लगन, तपस्या, कर्मयोगी बन,
बस साधना पूरी करनी है।

भारत की माटी तैयार है,
फिर से सोने की छटा बिखेरने को।

मौका भी है, दस्तूर भी है,
युवजन तैयार है, कुछ कर गुजरने को..

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा का महत्व और विकास की संभावनाएं

ऋषि कुमार अग्रवाल
वरिष्ठ प्रबन्धक एवं संकाय
स्टाफ कॉलेज, लखनऊ

सर्वविदित है कि संपूर्ण भारतवर्ष में विभिन्न भाषाओं एवं बोलियों के व्यापक प्रचलन के बावजूद संपर्क भाषा के रूप में हिंदी भाषा का स्थान सर्वोपरि है। भारतवर्ष में सांस्कृतिक एवं भाषाई रूप से इतनी विविधता होने के बावजूद हिंदी भाषा अनेकता में एकता का परिचय देते हुए भारत की एकात्म पहचान प्रस्तुत करती है। हिंदी भाषा हमारे संपूर्ण भारतवर्ष की संपर्क भाषा है तथा इसको संविधान में शासकीय रूप में राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया है। जिन प्रांतों की प्रथम भाषा, हिंदी के अतिरिक्त कोई अन्य भाषा है, वहाँ भी हिंदी को समझने व बोलने वालों की अच्छी खासी संख्या है। हम सभी लोग जानते हैं कि बड़ी लंबी अवधि तक अंग्रेजों का उपनिवेश रहने के कारण कुछ लोगों की दृष्टि में अंग्रेजी का स्थान नवीनतम ज्ञान विज्ञान के लिए परम आवश्यक है, परन्तु, हमें यह मानना होगा उनकी ऐसी मानसिकता भाषाई साम्राज्यवाद से प्रभावित सोच के कारण ही है।

हम आंकड़ों की बात करें तो सम्पूर्ण भारतवर्ष में लगभग 70% जनसंख्या हिंदी बोल व समझ सकती है। भारत से बाहर फिजी, सूरीनाम, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भी हिंदी बोलने वाले लोगों की अच्छी खासी संख्या है। नवीन सर्वेक्षणों के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सबसे ज्यादा बोली जानेवाली भाषा के पैमाने पर हिंदी का स्थान तीसरा है। इतिहास गवाह है जिस राष्ट्र ने भी अपनी मूल भाषा को छोड़कर अन्य भाषा को अपनाया है, वह कभी भी बहुत प्रगति नहीं कर पाया है। जापान, चीन आदि देश अपनी भाषा के प्रयोग द्वारा प्रगति की नई इबारत लिखने वाले देशों की श्रेणी में आते हैं।

अगर तकनीक की बात करें तो आज कंप्यूटर के ऐसे अनेक सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिनके माध्यम से कंप्यूटर पर हिंदी का प्रयोग बहुत ही आसान व तेज हो गया है। अब, लगभग सभी प्रमुख पुस्तकें हिंदी भाषा में उपलब्ध हैं। हिंदी भाषा में ऐसी क्षमता है कि यह विज्ञान व अन्य जटिल से जटिल संकल्पनाओं को बहुत ही आसानी से व्यक्त कर सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि हम सभी लोग क्लिष्ट (जटिल) शब्दों का प्रयोग करने की जगह सामान्य हिंदी के व्यावहारिक शब्दों का प्रयोग

कर हिंदी को आम जनता के लिए सुगम बनाएं।

वैश्विक स्तर पर आज का भारत वर्ष बहुत ही मजबूत स्थिति में है ऐसे में हिंदी का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार कर हिंदी की स्थिति को और सुदृढ़ बनाने की दिशा में कार्य किया जाना अपेक्षित है। हमें अंग्रेजी के भाषाई अभिजात्य से अपने को मुक्त करना होगा और कम से कम ऐसे लोगों के मध्य, जहाँ हिंदी भाषा को आसानी से समझा व बोला जा सकता है, वहाँ केवल हिंदी का प्रयोग करना चाहिए। आज विश्व के अनेक देशों जैसे कि मध्य पूर्व एशिया (खाड़ी देश), बहुत सारे यूरोपीय देश, संयुक्त राज्य अमेरिका, दक्षिण पूर्व एशिया देशों में बहुत सारे भारतीय प्रवासी काम कर रहे हैं। इन देशों में हिंदी को बोलने एवं समझने वाले लोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है। आज सभी महत्वपूर्ण सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे कि फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम आदि पर लोग हिंदी में अपनी भावनाएं आसानी से व्यक्त कर रहे हैं। गूगल आदि सर्च इंजन में हिंदी भाषा की अपार सामग्री उपलब्ध है। शायद ही कोई ऐसा विषय हो जिसके बारे में हिंदी में सामग्री इन्टरनेट पर उपलब्ध न हो।

इसके अतिरिक्त, हिंदी भाषा में विश्व भाषा बनने की भी पर्याप्त संभावनाएं हैं। विश्व भाषा से अपेक्षाएं होती हैं कि उसे बोलने समझने वालों का विस्तृत भौगोलिक विस्तार हो और हिंदी भाषा इस मानक पर खरी उतरती है। इसके अलावा उससे यह अपेक्षा होती है कि वह भाषा लचीली हो, उसमें विविध संदर्भों की अभिव्यक्ति की भरपूर क्षमता हो, उसका एक सर्वस्वीकृत मानक रूप हो, उसमें उप-मानकों की कुछ दूर तक स्वीकृति होते हुए भी परस्पर संप्रेषणीयता किसी ना किसी स्वीकृत मानक के माध्यम से बनी हुई हो और हिंदी में ये सभी गुण हैं।

हिंदी स्वयं में अपने भीतर एक अंतर्राष्ट्रीय जगत छुपाए हुए हैं। आर्य, द्रविड़, आदिवासी, स्पेनिश, पुर्तगीज, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, चीनी जापानी आदि सारे संसार की भाषाओं के शब्द इसकी अंतरराष्ट्रीय मैत्री एवं वसुधैव कुटुम्बकम् वाली प्रवृत्ति को उजागर करते हैं। जहां एक ओर विश्व की अनेक भाषाओं पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है, वहीं शोध में यह भी पाया गया है कि भारत की हिंदी भाषा का निरंतर गुणात्मक रूप से भी विकास हो रहा है। हिन्दी भाषाभाषी आबादी और इस भाषा के पाठकों की संख्या बहुत अधिक है, इसके फलस्वरूप, विदेशी राष्ट्र भी भारत की ओर अपनी व्यापारिक संभावनाएं तलाश रहे हैं।

अगर इंटरनेट की बात करें तो लगभग सभी प्रमुख हिंदी समाचार पत्रों के डिजिटल संस्करण उपलब्ध हैं, सभी प्रमुख हिंदी पत्रिकाएं आज इंटरनेट पर उपलब्ध हैं और इंटरनेट पर उपलब्ध होने के कारण हिंदी की सामग्री का प्रचार-प्रसार बहुत ही आसान हो गया है।

कोई भी व्यक्ति जो हिंदी भाषा को रोमन लिपि में लिखता था, आज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस आधारित तकनीक की मदद से पलक झपकते ही देवनागरी में लिख सकता है। अब न केवल आप कंप्यूटर पर हिन्दी में लिख सकते हैं, बल्कि, कोर्टाना और अलेक्सा आदि उपकरणों से हिन्दी में संवाद भी कर सकते हैं। हिन्दी भाषाभाषी क्षेत्र का विकास एक व्यापक बाजार के रूप में होने के कारण सभी कंपनियाँ अब अपने उत्पादों और अपनी सेवाओं को हिन्दी में ही पेश करना चाहती हैं, ताकि, वह हिन्दी भाषी आबादी के बड़े बाजार तक अपनी सीधी पहुँच बना सके।

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल"- इन पंक्तियों के माध्यम से जिस जीवन दर्शन की बात भारतेन्दु हरिश्चंद्र द्वारा की गई है, उसमें अपनी भाषा को ही सभी प्रकार की उन्नति और प्रगति का मूल आधार बताया गया है। विगत दशकों के दौरान हिन्दी भाषा के माध्यम से जिस प्रकार ज्ञान-विज्ञान का प्रसार हुआ है उसके अनुरूप आनेवाला समय हिन्दी भाषा के लिए संभावनाओं से भरपूर प्रतीत होता है। इसलिए, अब हिन्दी के विकास में तकनीक की बाधा का रोना रोने का समय नहीं रहा। आवश्यकता है कि अब अपनी भाषा के वैभव के प्रति गौरव का भाव जगाया जाए।

हिंदी का राष्ट्रीय और विश्व स्तर पर वर्चस्व

जगदीश मोहन
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, मुरादाबाद

समाज में रहने वाले प्रत्येक प्राणी को संप्रेषण की आवश्यकता पड़ती है। यही संप्रेषण शनैः शनैः संकेतात्मक से बदलकर भाषात्मक हो गया। भाषा हमारी भावनाओं, मंतव्य या आवश्यकताओं को दूसरों तक पहुँचाने का एक माध्यम है। भाषा का स्वरूप, भाषा की वृहद शब्दावली तथा भाषा के भावपूर्ण शब्द ही उसकी व्यापकता तथा सार्वभौमिकता के कारण बनते है।

चर्चा यहाँ हिंदी भाषा के वर्चस्व की हो रही है, हिंदी इतनी सशक्त तथा इतनी विकसित भाषा कैसे बन गयी? इसका पूर्ण श्रेय हमारी भारतीय संस्कृति को जाता है। आज के संदर्भ में हिंदी का जो स्वरूप हमारे सामने है, वह खड़ी बोली है जो अधिकतर उत्तर-पश्चिम भारत के प्रदेशों में बोली जाती है।

हिंदी का अपना यह स्वरूप और इसकी सर्वमान्यता ही है कि आज उसे विश्व स्तर पर उल्लेखनीय और सम्मानित स्थान प्राप्त है। यह हमारे देश का सौभाग्य है कि आज हिंदी विश्व में बोली जाने वाली भाषाओं में तीसरे स्थान पर है। भारत में हिंदी 44% जनता द्वारा बोली जाती है। हिंदी के बाद बांग्ला का स्थान आता है जो दूसरे स्थान पर है तथा इसके बाद मराठी, तेलुगु, तमिल आदि भाषाओं का स्थान आता है। भारत बहुल भाषाओं का देश है, जहाँ बहुत सी भाषाएँ बोली जाती हैं। इन भाषाओं, बोलियों और विविध संस्कृतियों के कारण ही यह देश बहुरंगी दिखायी देता है। आधिकारिक तौर पर 22 भाषाओं को सरकार ने मान्यता प्रदान कर 8 वीं अनुसूची में शामिल किया है।

28 राज्यों और 8 केंद्र शासित प्रदेशों के हमारे देश भारत में, 11 राज्यों में हिंदी बोली जाती है और समझी जाती है। साथ ही साथ इन राज्यों की आधिकारिक भाषा यानि राजभाषा भी है। भारत से चलकर हिंदी अनेक देशों का सफर तय कर चुकी है। मुस्लिम देश आबू धाबी ने भी एक ऐतिहासिक फैसले के अंतर्गत हिंदी को अपनी अदालतों की तीसरी आधिकारिक भाषा बना दिया है। यूनाइटेड स्टेट्स में हिंदी अधिकतर लोगों द्वारा बोली जाती है। न्यूजीलैंड में हिंदी चौथी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है। यूनाइटेड नेशन्स ने हिंदी का साप्ताहिक समाचार पत्र निकालना भी शुरू किया है। इन तथ्यों को देखते हुए हम अनुमान लगा सकते हैं कि हमारे देश की भाषा हिंदी कितने चमत्कारिक रूप से विश्व स्तर पर अपना परचम लहरा रही है और निकट भविष्य में यह विश्व आधार के कारण भारत में भी अपना वर्चस्व स्थापित करेगी। जो भाषा हमारी आजादी का माध्यम बनी, जिस भाषा के कारण हम आज विश्व मंच पर चमक रहे हैं। जो भाषा हमारी प्राचीन संस्कृति की पहचान है, जिस भाषा को अपनाकर सूर, कबीर, तुलसी, रहीम, जायसी, मीरा, जयशंकर प्रसाद और प्रेमचंद जैसी विभूतियों ने समाज को एक नई राह दिखाई तथा जीवन-मूल्यों को समझाया, कर्त्तव्य बोध कराया, ऐसी भाषा को हम समवेत प्रयासों से उसका अधिकतम प्रयोग अपने दैनिक एवं राजकीय कार्यों में करते हुए, उसकी पहचान को विशिष्ट बनाएं तथा इन प्रयासों के प्रतिफल को विश्व स्तर तक मुखर भी बनाएँ।

प्रत्येक राज्य की अपनी अपनी राजभाषा है जिसमें वे अपने प्रशासनिक कार्य करते हैं। इसके लिये केंद्र स्तर से उन पर किसी भी प्रकार का कोई दबाव नहीं है कि अपनी क्षेत्रीय भाषा को त्यागकर हिंदी का प्रयोग करें। किंतु जहां तक राष्ट्रवाद का मुद्दा है वहां उन्हें हिंदी के विरोध के स्थान पर निर्विरोध इस पवित्र विचार को

स्वीकार करना चाहिए कि हिंदी हमारी राष्ट्र भाषा हो। विश्व स्तर पर हमारी स्थिति और बेहतर होगी। जब हम अंतर्राष्टीय मंचों पर हिंदी का अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करेंगे। अंग्रेजी शिक्षा और बढ़ते अंग्रेजी शिक्षण संस्थानों ने आज हमारे नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को हमारी संतति से छीन लिया है। हमारी नयी पीढ़ी भारतीय संस्कारों और मूल्यों को भूल रही है।

आज विश्व के 175 विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जा रही है तो क्या यह हमारे लिए गर्व का विषय नहीं है। ऐसा इसलिए भी है कि हिंदी स्वयं में पूर्ण भाषा है, इसका व्याकरण तर्कसंगत है, यहाँ जो उच्चारित किया जाता है, वही लिखा जाता है। इसके वाक्यों में अलग से विशेषण की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि इसकी क्रिया ही उस अर्थ को पूर्णता प्रदान करती है। अंग्रेजी में लिखना या अंग्रेजी भाषा को पढ़ना कोई गलत नहीं है किंतु अपनी पहचान को खोना या विस्मृत करना गलत है।

आज हिंदी का वर्चस्व सर्वत्र दृष्टिगोचर है। हिंदी सामग्री का उपयोग गूगल पर 90% से भी अधिक बढ़ा है। गूगल ट्रांस्लेट पर चित्र खींचकर हम कई भाषाओं के लेख का अनुवाद कर सकते हैं। इंटरनेट में भी हिंदी ने अंग्रेजी को पीछे छोड़ दिया है। तकनीकी क्रांति के कारण विश्व में हिंदी की प्रतिष्ठा बढ़ी है। तकनीक के कारण ही हिंदी रोजगार की भाषा भी बन गयी है। हिंदी में ट्वीट करना भी लोकप्रिय हो रहा है। भले ही लोग अंग्रेजी में टाइप करते हों किंतु आत्मा या प्राण तो उसमें हिंदी के ही होते हैं।

आइए, हम समस्त भारतवासी चाहे हिंदी भाषी हों या हिंदीतर भाषी, आज यह प्रण लें कि राष्ट्रवाद के साथ हमेशा रहेंगे और हमारे जितने भी हिंदी प्रचारक मंच, समितियाँ, आयोग या संगठन हैं, वे सभी राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को समृद्ध बनाते हुए उसकी प्रगति के लिए प्रयासरत रहेंगे तथा संघर्षरत रहेंगे। ताकि राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को समुचित गौरव प्राप्त हो सके। पहले हमें स्वयं पर विजय प्राप्त करनी है, उसके बाद ही हम विश्व स्तर पर अपनी भाषा के वर्चस्व का परचम लहरा सकते हैं।

पंख

रितिका अग्रवाल
एस.डब्ल्यु.ओ. 'ए'
ग्वालियर, मुख्य शाखा

कुछ करने की इच्छा कभी भी तुम खत्म ना करो,
अपनी हर उम्मीद, हर खुशी की वजह तुम खुद बनो।

सलाह देने वाले दुनिया में मिलेंगे बहुत,
पर सपने देखने का हक, तुम खुद ही रखो।

क्या था? क्या है? क्या होना था? और क्या हो गया?
पछतावे की गुल्लक, हमेशा अपने साथ ना रखो।
हाथों में प्रायश्चित का दम होना जरूरी हैं।

प्रायश्चित, कुछ और नहीं जीने की वजह ही तो है।
स्वर्ग की सीढ़ी का, एक कदम ही तो है।

चढ़ते रहो, उतरते रहो, पर कर्म सदा तुम करते रहो।
डरो नहीं तुम गिरने से, पर उठकर संभलने का तुम दम रखो।

तुम खुद ही तो हो, जीने की वजह, सपनों की वजह, उड़ने की वजह,
खुद को भी तुम कम ना आंको, अपने ही पंखों को तुम ना काटो।।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मल्टीप्लेक्स से मोबाइल तक का सफर

अर्चित गुप्ता
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्र सतर्कता इकाई, मेरठ

मनोरंजन कहने को एक बहुत छोटा शब्द है, किन्तु आजकल की इस भाग-दौड़ और भौतिकता से भरी जिन्दगी में एक अहम भूमिका निभाता है। ऐसा ही एक मनोरंजन है "सिनेमा" जो भूतकाल में छोटे-छोटे नाटकों के रूप में नाटकशाला या रंग-मंच पर प्रदर्शित हुआ करता था। समय के साथ एवं तकनीकी विकास के कारण यह नाटक, सिनेमा में और नाटकशाला, एकल चलचित्र पट (सिनेमाघर) में बदल गए। आम आदमी के लिए यह पटल मनोरंजन के बहुत ही महत्वपूर्ण साधन बन गए। समय, आधुनिकीकरण एवं बढ़ती जनसंख्या का ऐसा दौर आया कि इसने बहुपर्दिय सिनेमाघरों, जिन्हें हम मल्टीप्लेक्स भी कहते हैं, को जन्म दिया।

बहुपर्दिय सिनेमाघर, एक ऐसी इमारत होती है, जिसमें एक से अधिक चलचित्र पटल होते है और वह सभी सार्वजनिक तौर पर एक ही टिकट खिड़की, प्रसाधन, जलपान गृह आदि सुविधाओं से युक्त होते हैं। इन सभी के साथ-साथ, इनमें 3डी, 4डी, 7डी चलचित्र, बच्चों के झूले एवं अन्य प्रकार के खेल भी होते है। बीच का एक दौर था, जब सिनेमाघर पारिवारिक स्थान नहीं थे, कमजोर हॉल, जीर्ण-शीर्ण और खराब ईमारतें, बैठने की असुविधायुक्त जगह और अस्वच्छ भोजन जिसके कारण, आबादी का एक बड़ा हिस्सा सिनेमाघरों से अलग-थलग हो गया था।

मल्टीप्लेक्स की शुरूआत भारत में अगर किसी ने की थी, तो वह है, PVR (प्रिया एक्सहीबिटर प्राइवेट लि.)। इस विलेज रोड शो लि. के साथ मिलकर सन् 1995 में 'PVR Cinema' का गठन किया। 13 जून, 1997 को दिल्ली के साकेत में अनुपम-4, जो कि अब PVR - अनुपम के नाम से जाना जाता है, का उद्घाटन हुआ और इस तरह भारत में मल्टीप्लेक्स की नींव पड़ी। अनुपम-4 में '4' का आशय था कि इसमें 4 सिनेमा पटल हैं। भारत के पहले मल्टीप्लेक्स में पहली फिल्म 'यस बॉस' दिखाई गई। इसकी गुणवत्ता एवं सुविधा लोगों को इतनी पसंद आई कि अन्य कम्पनियों के एक के बाद एक मल्टीप्लेक्स खुलते गए जैसे-आइनॉक्स, सिनेपोलिस आदि।

सन् 2000 के शुरूआती वर्षों में मनोरंजन के इस साधन ने सिनेमा के प्रति आम जनमानस की रूचि एवं सोच को पूर्णत: परिवर्तित कर दिया। यह एक दौर शुरू हुआ था, जब मल्टीप्लेक्सों में दिन-प्रतिदिन ध्वनि का भी तकनीकीकरण हो रहा था। पहले **डोल्वी** डिजिटल और फिर **डोल्वी** एटमोस। अब मल्टीप्लेक्सों ने सिर्फ सिनेमा पटल ही नहीं बल्कि अन्य इन्डोर खेल जैसे स्नूकर, फूटबॉल, एअर हॉकी आदि को भी अपना हिस्सा बनाया। आम जनता की रूचि और समय की मांग को देखते हुए इन मल्टीप्लेक्सों ने इन्डोर खेल कम्पनियों के साथ गठबंधन कर, तरह-तरह के रोमांचक विषयों पर आधारित खेल प्रणाली की शुरूआत की जैसे 3डी, 4डी, 7डी लघु चलचित्र, फनजोन, हॉरर हाउस आदि।

देश की पहली मल्टीप्लेक्स कम्पनी ने हाल ही में 3-12 वर्ष की उम्र वाले बच्चों के लिए 'PVR प्ले हाउस' खोला, जिसमें उनके लिए 49 सीट वाला हॉल एवं अन्य झूले- खेल हैं। यह फिलहाल दिल्ली, मुम्बई, चेन्नै एवं हैदराबाद में हैं। मांग को देखते हुए देश का सबसे बड़ा मल्टीप्लेक्स चेन्नै में 'मेगाप्लेक्स मायाजाल' नाम से खुला, जिसमें एक बार में 16 सिनेमा चल सकते हैं।

एक सर्वे अनुसार वर्ष 2018 में भारत में 2950 मल्टीप्लेक्स पटल थे और यह अनुमानित है कि यह प्रणाली 7% CAGR की दर से बढ़ते हुए, वर्ष 2024 तक 4500 हो जाएगी। सन् 2020 के अंत तक भारत की सबसे पहली कम्पनी PVR के 845 पटल थे। वित्तीय वर्ष

2019-20 में सभी कम्पनियों की कुल शुद्ध आय करीब रू. 950 करोड़ थी। इन सभी आंकड़ों से यह साफ है कि मल्टीप्लेक्स लोगों को खूब भा रहे हैं।

अचानक ही, वर्ष 2020 की शुरूआत में कोरोना नाम की बीमारी ने पूरी दुनिया समेत भारत को भी प्रभावित कर दिया था और इसी के साथ सभी मल्टीप्लेक्स बन्द कर दिए थे। इस समय तक भारत में हर इंसान के हाथ में मोबाइल था। तकनीक का आधुनिकीकरण इतनी तेज गति से हुआ कि मोबाइल की छोटी-छोटी स्क्रीन अब तक 5-6 इंच की हो चुकी थी। मोबाइल अब सिर्फ कॉल या मैसेज करने तक सीमित नहीं रहे थे। अब इसमें विडियोगेम, सिनेमा, गाने इन्टरनेट एवं इससे जुड़े तमाम एप्स, पोर्टल, विडियो-कॉल, मीटिंग सभी सुविधाएं मिलने लगी।

सन् 1995 में, पहली बार भारत में मोबाइल से कोलकात्ता से दिल्ली कॉल किया गया था। आज जब भारत विश्व में स्मार्ट फोन का दूसरा सबसे बड़ा बाजार बन गया है, तब अगर कोई सोचे कि 4900/- रु. का प्रीपेड सिम खरीदना पड़े और इनकमिंग, आउटगोइंग पर 17/- रु. प्रभार देना पड़े तो यह एक मजाक सा लगेगा, लेकिन 1995 में यही सच था। यह ऐतिहासिक कॉल GSM नेटवर्क पर दो नोकिया मोबाइल पर किया गया था। इस कॉल ने एक नई शुरूआत की चिंगारी लगा दी और फिर GSM से CDM से 2जी से 3जी से 4जी और अब 5जी पर शोध चल रहा है। एक-एक कर नई-नई कंपनियां आती गई। बीएसएनएल हच, आइडिया, रिलायंस आदि और मोबाइल पर बात करना आसान एवं सस्ता करती गई।

सितंबर, 2004 में, तेजी से बढ़ते भारतीय मोबाइल फोन बाजार ने एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर पार कर लिया था। देश में पहली बार मोबाइल फोन की संख्या लैंडलाइन की संख्या से आगे निकल गई थी। हालांकि भारत के मोबाइल निर्माण उद्योग को भांपने में अभी भी कुछ समय लगा। 2014 तक, भारत में केवल 2 मोबाइल निर्माण इकाईयां थी। प्रधानमंत्री श्री मोदीजी सन् 2015 में 'मेक इन इंडिया' योजना लाएं और फिर शुरू हुआ, भारत में अन्य कंपनियों का मोबाइल निर्माण, अब लगभग हर हाथ में स्मार्टफोन था। बस कमी थी, तो सस्ते डेटा की।

सन् 2016 में रिलायंस ने एक नई कंपनी का गठन किया 'रिलायंस जियो' जिसने सबसे सस्ते स्मार्टफोन डेटा देने का दावा किया। सितंबर 2016 तक आते-आते, यह सेवा व्यवसायिक रूप से उपलब्ध हो गई और 31 मार्च, 2017 तक मुफ्त 4जी डेटा वॉयस कॉल की सेवाओं को प्रक्षेपण किया गया। फरवरी, 2017 तक जियो ने 100 मिलियन ग्राहक हासिल कर लिए थे। बाजार में इसके प्रवेश ने पूरे भारत में स्मार्टफोन अपनाने में तेजी लाते हुए पूरे नेटवर्क में डेटा की कीमतों में भारी कमी ला दी। मल्टीप्लेक्स के समान्तर और कम चर्चित सिनेमा के साधन अब स्मार्टफोन पर बहुत ही कम खर्च में उपलब्ध थे। अमेजन प्राइम, नेटफ्लिक्स, हॉटस्टार में भारतीय एवं विदेशी सिनेमा का अपार भंडार था। आम व्यक्ति को अब महंगे मल्टीप्लेक्स में जाने से अच्छा घर पर अपने स्मार्टफोन पर सिनेमा देखना ज्यादा पसंद आनो लगा। इसका एक कारण यह भी रहा कि व्यक्ति अपनी सुविधा एवं समय के अनुसार कही भी, कभी भी देख सकता है। इन्ही एप्स की तरह एक प्रकार और आया, जिसे पोडकास्ट कहते हैं, उदाहरण, सावन, स्पोटिफाई, विंक आदि। इन पौडकास्ट एप्स में असीमित गाने होते हैं, जिन्हें कहीं-भी, कभी-भी और कितना भी सुन सकते हैं। पौडकास्ट, ओ. टी. टी. गेमिंग एप्स का सबसे बड़ा फायदा यह है कि इसके डेटा को संग्रहित करने के लिए कोई हार्ड-डिस्क या पेनड्राइव की जरूरत नहीं होती है। इसी तरह, अब मोबाइल में अनेक ऐसे गेमिंग एप्स भी आने लगे, जिनको खेलने के लिए न तो कोई ड्राइव की जरूरत, न चिप की और न ही किसी बाहरी उपकरण की जरूरत होती है।

वर्तमान में भारत में ओ.टी.टी. मीडिया सेवाओं के लगभग 40 प्रदाता हैं। जो इंटरनेट पर स्ट्रीमिंग मीडिया वितरित करते हैं। वित्तीय वर्ष 2018 में, भारत में, ओ.टी.टी बाजार 2150 करोड़ का था, जो 2019 में बढ़कर 3500 करोड़ रू. हो गया। यह भी कहा जा सकता है कि मोबाइल अब चलता- फिरता मल्टीप्लेक्स बन गया है। एक सर्वे के अनुसार वित्तीय वर्ष 2020-21 में महामारी की वजह से स्मार्टफोन बाजार में पहली बार 2020 की दूसरी छमाही में 10 करोड़ यूनिट को पार किया और मामूली 4% की गिरावट दर्ज की गई। 2021 में भारत के स्मार्टफोन में 23% प्रतिवर्ष की वृद्धि हुई। कोरोना महामारी में जहां एक

तरफ स्कूल, दफ्तर, मल्टीप्लेक्स, मॉल सब बंद थे, वहां मोबाइल की 5-6 इंच की स्क्रीन से यह सब काम घर बैठे हो रहे थे। ऑनलाइन क्लास, वर्क फ्रोम होम, सिनेमा, ई-कॉमर्स आदि। यह सब अमूमन मोबाइल के बहुत से फायदों में से कुछ हैं, पर इसके साथ इसके कुछ दुरूपयोग भी हैं। बच्चों का हिंसा-प्रदर्शक गेम खेलना, ओटीटी पर अभद्र भाषा वाली फिल्में देखना, एक लम्बे समय तक मोबाइल पर चिपके रहना, जो न सिर्फ आपको समाज से काटता है, बल्कि अनेक बीमारियां भी मुफ्त में दे देता है। वहीं दूसरी ओर मल्टीप्लेक्स का वातावरण भी अब काफी हद तक अभद्र और संस्कृति को चोट पहुंचाने का कार्य कर रहा है। इसके साथ ही, एक आम आदमी के लिए मल्टीप्लेक्स में अपने परिवार को सिनेमा दिखाना कई बार बजट गड़बड़ कर देता है।

मल्टीप्लेक्स से मोबाइल तक के सफर में भले ही कई उतार-चढ़ाव आएं हो, परन्तु यह स्पष्ट है कि दोनों ही मनोरंजन के लिए जरूरी हैं। अपने-अपने फायदे और नुकसान हैं और अगर दोनों को ही एक समान रूप से सिर्फ मनोरंजन या अन्य कुछ जरूरी कार्य तक सीमित रखते हुए इस्तेमाल किया जाए, तो दोनों ही एक आम आदमी के लिए अद्भुत साधन है। "मोबाइल फोन का नाम गलत है, इसे मानव ज्ञान का प्रवेश द्वार कहा जाना चाहिए।"

मैं हूँ बेटी

दीपक गोस्वामी
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, गोरखपुर

मैं हूँ बेटी, मैं हूँ बेटी,
सबकुछ मेरे पास यहीं है।
जब जन्म लिया, क्या जुर्म किया?
माँ बाप ने मेरे शर्म किया।
ढाया कहर जब भी दुनिया ने,
मैंने खुद को ही नरम किया।
पर इस नरमी से तुझमें,
परिवर्तन कुछ खास नहीं है,
मैं हूँ बेटी, मैं हूँ बेटी,
सबकुछ मेरे पास यहीं है।
मैं दुर्गा हूँ?, मैं काली हूँ,
मैं हीं तेरी रखवाली हूँ।
उत्सव तेरी, उमंग मैं तेरी,
मैं ही तेरी दीवाली हूँ।
दीवाली की इस ज्योति के
स्थिर अब हालात नहीं हैं।
मैं हूँ बेटी, मैं हूँ बेटी,
सबकुछ मेरे पास यहीं है।

नीयत बुरी तुम्हारी है,
मैं सहमी सी रहती हूँ।
पर सम्भालो खुद को तुम,
ये अंतिम बार मैं कहती हूँ।
काली रूप को याद करो,
ये अबला जिन्दा लाश नहीं है।
मैं हूँ बेटी, मैं हूँ बेटी,
सबकुछ मेरे पास यहीं है।
कौन है भाई, कौन पिता है,
कलंकित सारा रिश्ता है।
संस्कार की महत्ता भूले,
कौन बचा यहाँ किसका है?
दीपक तेरे इस समाज पर,
मुझको अब विश्वास नहीं है।
मैं हूँ बेटी, मैं हूँ बेटी,
सबकुछ मेरे पास यहीं है।

इंसान कैद मोबाइल के पिंजरे में, परिंदे आजाद खुले गगन में

अंकिता वर्मा
प्रबंधक (सू.प्रौ.)
मेरठ कैंट

आरव रो रहा था। माँ ने पूछा, किन्तु उसने कोई जवाब नहीं दिया। पापा भी आज ऑफिस से देर से आए थे और आने के बाद कुछ पूछने की बजाय अपनी मीटिंग में व्यस्त हो गए। आरव ने खाना भी नहीं खाया और रोज की तरह वो अपने मोबाइल फोन में फेसबुक और व्हाट्सअप में लग गया। काम खत्म करके आरव की माँ भी अपने मोबाइल में व्यस्त हो गई। इस तरह वह रात खत्म हो गई।

सुबह उठते ही, शुरूआत में सभी एक-दूसरें को अभिवादन करने के बजाय अपने-अपने मोबाइल फोन में व्यस्त हो गए। आज आरव ने स्कूल जाने से मना कर दिया था। ऐसा क्या हो गया था, उसे किसी ने जानने की कोशिश भी नहीं की। बस मोबाइल में ही लगा रहा।

फिर शाम हुई और पापा मम्मी ने आज अपने बेटे से बात करने के लिए अपनी दिनचर्या से थोड़ा सा समय निकाला। तीनों खाने की टेबल पर बैठे। पापा ने उससे प्यार से पूछा कि कैसा रहा दिन, बस पूछने की देर थी कि वह सुबक-सुबक कर रोने लगा। उसने कहा कि स्कूल में पेरेन्टस टीचर्स मीटिंग थी, पर आप दोनों में से कोई नहीं आया। गलती किसकी कही जाएं। मोबाइल पर ही मैसेज आया, दोनों ने देखा भी था, पर एक-दूसरे पर टाल दिया। मम्मी-पापा इतने व्यस्त हो गए है कि मासूम बचपन के लिए समय ही नहीं है और वह सिर्फ अपनी ही दुनिया में सिमट सा गया है।

कुछ काम करना हो तो मां बाप बच्चों को मोबाइल पकड़ा देते हैं और उनके साथ उनकी कोमल भावनाओं का ध्यान नहीं रखते। क्या गजब नजारा है, भगवान कि इंसान पिंजरे में कैद हो गया है, और परिंदा आजाद घूम रहा है।

आरव की बात सुन पापा-मम्मी एक-दूसरे को सिर्फ देखते ही रह गए, उन्हें समझ ही नहीं आया मासूम बच्चे के सवाल का क्या जवाब दें। सीमा (आरव की माँ) ने यह भी ध्यान नहीं दिया कि भोला आरव प्राकृतिक वातारण से दूर मोबाइल के पिंजडे में कैद हो रहा है। अब से दोनों ने ये फैसला किया कि वो घर में जितना जरूरी हो उतना ही समय मोबाइल या लैपटॉप पर व्यतीत करेंगे और अब आरव ने भी यह फैसला कर लिया था कि वह अपने मोबाइल से ज्यादा मम्मी-पापा को समय देगा और उनकी बातों का मान रखेगा।

"अजब नजारा बनाया है, तूने ऐ इंसान,
आज इंसान ही पिंजरे में बंद है,
और परिंदा आजाद घूम रहा है।"

संस्मरण 'झूठा-सच'

अजय कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
आरएएमपीसी, सतना

ऐसे तो जिंदगी के सफर में कई ऐसे मुकाम आते हैं, जो सदा के लिए हमारी जिंदगी की किताब में अपनी अलग छाप छोड़ जाते हैं। इस कहानी के माध्यम से, मैं एक ऐसे ही वाकये को आपके साथ साझा करना चाहता हूँ। ये बात उन दिनों की है जब मैं बिहार के एक सुदूर ग्रामीण क्षेत्र की शाखा में, शाखा प्रमुख के रूप में पदस्थ था। उस शाखा में मेरे सहयोगी के रूप में दो और लोग, संदीप एवं सज्जन, क्रमशः अधिकारी एवं खजांची के पद पर पदस्थ थे। शहर से शाखा की दूरी करीब 30 किलोमीटर थी। दुकान के नाम पर शाखा के पास मात्र एक नाश्ते की दुकान थी, जिसमें चाय के साथ-साथ समोसा भी मिल जाया करता था। ग्रामीण शाखा होने के कारण लेन-देन करने वाले लोगों की ज्यादा भीड़ होती थी। ग्राहकों में निम्न आय वर्ग के लोग ज्यादा थे। जिनके खातों में, दूसरे शहरों से उनके परिजन पैसे भेजा करते थे।

वह सोमवार का दिन था। शनिवार एवं रविवार, दो दिन की छुट्टी के बाद शाखा खुलने के कारण शाखा परिसर में ग्राहकों की भीड़ अन्य दिनों की अपेक्षा ज्यादा थी। उस पर गर्मी का मौसम होने के कारण लोगों को भीड़ में खड़े रहने में काफी परेशानी हो रही थी। सब चाह रहे थे कि उनका काम जल्दी से जल्दी हो जाए। तभी अचानक मेरी नजर उस भीड़ में खड़ी एक बूढ़ी अम्मा पर पड़ी, जिनकी उम्र लगभग 70-75 वर्ष रही होगी। वह भी भीड़ में जूझती हुई, तेजी से आगे बढ़ने का प्रयास कर रही थी और अंततः वह भीड़ को चीरती हुयी किसी तरह संदीप के पास पहुँचने में सफल हो गयी। संदीप के काउंटर पर पहुँच कर, उसने अपने मैले- कुचैले झोले में से एक फटी पुरानी पासबुक निकाल कर संदीप की ओर बढ़ाते हुए कहा- "बाबू जरा देख कर बताओं ना मेरे पैसे आये हैं कि नहीं"? संदीप एक मृदुभाषी एवं शान्तचित्त स्वभाव का व्यक्ति था। उसने बूढ़ी अम्मा से पासबुक लेकर खाते की जाँच की और बताया की-"अम्मा आपके खाते में कोई पैसा नहीं आया है"। यह सुनकर बूढ़ी अम्मा काफी परेशान हो गई। उनको लगा मानो किसी ने उनके सपनों का महल ढहा दिया हो। मगर फिर भी खुद को संभालते हुये, उसने संदीप से गिड़गिड़ाते हुये पुनः अनुरोध किया कि वह फिर एक बार उसके खाते की अच्छे से जांच कर दे। ग्राहकों की भीड़ के कारण संदीप भी परेशान हो रहा था, फिर भी उसने पुनः दो-तीन बार खाते की जांच की और बताया कि कोई पैसा नहीं आया है। यह सुनकर वह बूढ़ी औरत बहुत मायूस हो गई।

मैं अपने केबिन से यह सब देख रहा था तभी सहसा मुझे याद आया कि वह बूढ़ी अम्मा पिछले कई दिनों से रोज भरी उम्मीद के साथ शाखा में आती हैं, किन्तु मायूस हो कर वापस चली जाती हैं। आज भी कुछ ऐसा ही हाल था। तब मैंने संदीप को कॉल कर के कहा कि वह उस माता जी को मेरे पास भेज दे। वह मेरे केबिन में आ गई और मेरे कुछ पूछने से पहले ही अपनी पासबुक को मेरी तरफ बढ़ाते हुए अपनी व्यथा-कथा कहने लगीं। मैंने पासबुक ले ली और जाँचने लगा। उनकी आँखों में एक बार फिर आशा की किरण चमक उठी। किन्तु जैसे ही मैंने बताया कि "पैसे उनके खाते में नहीं आए हैं" यह सुनते ही, वह फिर से हो गई। उनको ऐसे परेशान देखकर मैंने मेज पर रखे पानी के गिलास को उनकी तरफ बढ़ा दिया। पानी पीने के बाद वो थोड़ा स्थिर हुई, तो मैंने उनसे पूछा कि आपको पैसे कौन और कहाँ से भेजता है। उसने बताया कि, उसका एक ही बेटा है, जो मुंबई में काम करता है। वही उसे हर महीने पैसे भेजता है। लेकिन कुछ दिनों से उसने पैसे नहीं भेजे हैं। पासबुक

देखने के बाद पता चला कि, पिछले तीन महीने से पैसे नहीं आए हैं। इससे पहले नियमित रूप से प्रत्येक महीने की 3 या 4 तारीख को उसके खाते में 2500 रुपये आते थे। उसकी इस दीनहीन स्थिति को देख मेरा मन दया भाव से भर आया। मैंने उनसे पूछा कि उसके बेटे का कोई मोबाइल नंबर है क्या? इस पर उसने अपने झोले से एक कागज का टुकड़ा निकाल के मेरी तरफ बढ़ा दिया। उस पर एक मोबाइल नंबर लिखा था। मैंने अपने मोबाइल से उस नंबर पर फोन लगाया, परन्तु पूरी घंटी बजने के बावजूद किसी ने भी फोन नहीं उठाया। फिर भी मैंने उसको खुश करने के लिए बोल दिया कि तुम्हारे बेटे से मेरी बात हो गयी है और वह बहुत जल्दी ही पैसे भेज देगा। यह सुनकर कर उस बूढ़ी अम्मा के चेहरे पर थोड़ी खुशी आ गई। लेकिन उसने मुझसे पूछा कि वह कैसा है और तीन महीनों से पैसे क्यों नहीं भेज पाया है? मैंने उसे समझाते हुये बताया कि उसकी नौकरी चली गयी थी, इसलिए वो पैसे नहीं भेज पा रहा था। यह सुनकर वह बोली साहब ये बात जरा बाहर बैठे मेरे पति को बता दीजिये ना। मेरा पति और मेरे गाँव वाले कहते है कि मेरा बेटा अब इस दुनिया में नहीं है। उसे किसी महामारी ने निगल लिया है। उस बूढ़ी अम्मा की यह बात सुन कर ऐसा लगा जैसे मेरे पैरों तले से जमीं खिसक गयी हो।

अभी मैं कुछ संभल पाता उससे पहले ही जिस नंबर पर मैंने फोन लगाया था उस नंबर से फोन आ गया। पता चला की वह नंबर किसी फैक्ट्री का है। उस बूढ़ी अम्मा के बेटे का नाम बताने पर पता चला कि तीन महीने पहले उसके बेटे की मौत कोरोना महामारी की वजह से हो गई थी। घर का कोई मोबाइल नंबर नहीं होने के कारण उसके घरवालों को सूचना न दी जा सकी। वह जिस फैक्ट्री में काम करता था, उसी फैक्ट्री के मालिक ने उसका दाह संस्कार करवा दिया। यह सब बातें जानकर मैं सन्न रह गया। किन्तु उस बूढ़ी अम्मा की आँखों में खुशी देखकर कुछ भी बताने की हिम्मत ना हुई। ये सब बातें जानकर मुझे उस बूढ़ी अम्मा की चिंता होने लगी। मैंने उनको कुछ देर बाहर बैठने के लिए बोल दिया। फिर मैंने संदीप और सज्जन को मेरे केबिन में बुलाया और ये सारी बातें बताई। उस बूढ़ी अम्मा की दयनीय स्थिति देख कर हम सब ने नियमित रूप से एक नियमित राशि इकठ्ठा कर उनकी मदद करने का निर्णय लिया। हम सब ने मिलकर 2500/- रुपये इकठ्ठा किए एवं उस अम्मा के खाते में जमा कर दिए। फिर मैंने बताया की उनके बेटे ने पैसे भेज दिये है। यह सुनकर उस बूढ़ी अम्मा की आँखों में खुशी की चमक आ गई। हमने उसके खाते से पैसे निकलवा के उनके हाथों में दे दिए। पैसे लेने के बाद उनके चेहरे पे एक धन्यवाद वाली झलक देखने को मिली और हमें आत्मसंतुष्टी की अनुभूति हुई।

वो अम्मा तो सच्चाई से अनजान खुश हो के अपने घर चली गयी, लेकिन हम सब के सामने एक प्रश्न छोड़ गई। इस बूढ़ी अम्मा जैसी कितनी अम्माएं और होंगी जो अपने बेटे से बिछड़ गई होंगी? इस कोरोना महामारी ने ना जाने कितने परिवारों को निगल लिया? कोरोना से अब तक पूरे विश्व में 20 लाख से अधिक लोग संक्रमित हो चुके हैं और एक लाख से अधिक लोगों की जाने जा चुकी हैं। मगर इस से पहले भी कई महामारी आई हैं, जिन पर हमने पूरी तरह से विजय हासिल की है और इसी तरह कोरोना को भी हम साथ मिलकर हराएंगे। साथ ही हम यह भी प्रण लें कि इस महामारी के कारण हमारे समाज में, हमारे आस-पड़ोस में जिन किन्हीं की जिंदगियों में निराशा छा गयी हो, जो जरूरतमंद हैं, उनकी हमें हर संभव सहायता करनी चाहिए और अपने नैतिक और मानव धर्म का निर्वाह करना चाहिए। इस संबंध में मैं रामचरित मानस की कुछ पंक्तियो के साथ अपनी लेखनी को विराम देना चाहूँगा

"परहित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।"

बैंकर के रूप में मेरी सेवा यात्रा

निशा चोरेटिया
प्रबंधक (राभा)
अंचल कार्यालय, मेरठ

यात्रा, यह दो वर्णों का शब्द, जिसके मायने प्रत्येक व्यक्ति के लिए अलग-अलग होते हैं। आयु, परिस्थिति, स्थान के अनुसार इस शब्द के साथ व्यक्ति की मनः स्थिति भी अलग- अलग होती है। कभी किसी का मन खुश हो जाता है, तो कभी कोई मायूस हो जाता है। यात्रा से मतलब केवल एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना ही नही होता है, अपितु जीवन का हर एक पड़ाव, जीवन से जुड़ा एक हिस्सा यात्रा कहलाता है, जिसमें एक महत्वपूर्ण पहलू है, जीवनयापन का जरिया। हर व्यक्ति अपनी क्षमता, अपने विचार और काबिलियत के अनुसार अपने जीवनयापन का माध्यम चुनता है। मैंने भी अपनी जीवन यात्रा को सुविधाजनक, आरामदायक एवं आनन्ददायक बनाने के लिए आय के स्त्रोत हेतु नौकरी का माध्यम चुना।

मैंने अपनी अध्ययन यात्रा अर्थात् पढ़ाई के दौरान ही नौकरी हेतु प्रयत्न करना प्रारम्भ कर दिया था और मेरी पढ़ाई पूरी होने के साथ-साथ ही मुझे मेरी आजीविका का साधन मेरी नौकरी की प्राप्ति भी हो गई थी। दिनांक 23 सितंबर, 2013 में मैंने अपनी नई यात्रा, सेवा यात्रा इलाहाबाद बैंक से प्रारम्भ की। इसी दिन मेरी नियुक्ति इलाहाबाद बैंक के प्रधान कार्यालय, कोलकाता में हुई। इसके लिए मैंने पहले जयपुर से कोलकाता तक की यात्रा की। जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि यात्रा के मायने परिस्थिति, स्थान के अनुसार अलग-अलग होते हैं। वैसे ही यह यात्रा मेरे लिए मिली-जुली भावनाओं वाली थी। मुझे बेहद खुशी थी कि मैंने अपने जीवन का एक लक्ष्य प्राप्त किया और आगे बढ़ रही हूँ, किन्तु अन्दर ही अन्दर डर भी था। नई दुनिया, नया माहौल, नई जगह और नए लोग होंगे, मैं अकेले कैसे रहूँगी। घर वालों से दूर जाने का दुःख अलग था, किन्तु कहते हैं न कि डर के आगे जीत है, तो मैं डर को धता बताकर आगे निकल गई। ऐसे मेरी सेवा यात्रा की शुरूआत हुई।

कोलकाता मेट्रो शहर, जहां मैं पहली बार घर से इतनी दूर गई थी। शुरूआत में मुझे वहां बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। अजीब शहर, अजीब लोग, उस पर उनकी बोल-चाल की भाषा भी एकदम अलग थी, लेकिन अच्छी बात यह थी कि वहां सभी हिन्दी भाषा जानते थे। इसलिए ज्यादा समस्या नहीं आई। वहां का मुख्य भोजन माछ-भात (मछली चावल) है, और मैं राजस्थानी, शुद्ध शाकाहारी और जिसे खाने में चावल नहीं, गेहूँ की रोटी चाहिए। खाने के लिए बहुत घूमना पड़ा, ताकि शाकाहारी भोजन मिल सके। तीन दिन ऐसी ही परेशानियों से जूझते हुए निकले। इसके बाद जयपुर में हमारे पड़ोसी ने अपने दूर के रिश्तेदार, जो कि कोलकाता में रहते थे, से सम्पर्क कर मेरे बारे में बताया।

उनका व्यवहार मेरे प्रति बहुत ही आत्मीयतापूर्ण रहा। वे मुझे अपने घर लेकर गए और मेरा बहुत ध्यान रखा और सहायता की। इस तरह मुझे नई दुनिया, नई जगह पर अपनेपन वाले अच्छे लोग मिले।

मैं लगभग 2 दिन अंकल एवं आंटी के घर पर ही रही, तब तक मुझे बैंक की तरफ से बैचलर फ्लैट भी मिल गया। अंकल ने मुझे मेरे नए आवास तक पहुंचाया। वहां मुझे बैंक की तीन अधिकारी और मिली। शुरूआत में मुझे थोड़ा अजीब लगा, किन्तु उन तीनों का स्वभाव

बहुत अच्छा होने के कारण हम जल्द ही घुल-मिल गए और इस तरह मेरी स्वच्छन्द, स्वतंत्र और मस्ती भरी हॉस्टल लाइफ शुरू हुई, जिसे मैंने जी भर कर जीया। कार्यालय में भी मुझे सभी अच्छे लोग मिले। सभी ने मुझे पारिवारिक माहौल दिया, ताकि मुझे दूर बैठे घरवालों की कमी महसूस न हो। सभी ने मुझे कॉर्पोरेट जगत में कार्य करना सिखाया, साथ ही कॉर्पोरेट माहौल को समझकर निर्णय लेना भी सिखाया। मैंने भी आगे बढ़कर कार्यालय का कार्य सीखा। इसके बाद जब मैं नए माहौल में थोड़ा ढलने लगी तो सबसे पहले मैंने कोलकाता (CITY OF JOY) शहर घूमा। मैं अपने साथ रहने वाली दोस्तों के साथ छुट्टी वाले दिन घूमने जाती और खूब मस्ती करती। वहां लगभग 1 साल रही और यादों का बड़ा-सा पिटारा भर लिया। अब मैं पहले वाली निशा से थोड़ा बदल गई और नई निशा बन गई जो आत्मविश्वास से भरी हुई, निडर निशा हो गई थी। न केवल अपनी पेशेवर जिन्दगी में, अपितु व्यक्तिगत जिन्दगी में भी पहले से बेहतर बन गई थी। इस विषय पर मेरे विभागाध्यक्ष ने मेरे कार्यालय के पहले दिन ही कह दिया था कि इस लड़की को 2 महिने बाद देखना, ये बदल जाएगी और हर मामले में सबको पीछे छोड़ एडवांस बन जाएगी, इसमें काबिलियत है। मैं आज भी उनका शुक्रिया अदा करती हूँ कि उन्होंने मेरी काबिलियत को पहचाना और मुझे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया।

एक साल बाद, जब मेरा ट्रांसफर मेरे शहर से थोड़े पास, आगरा में हो गया तो मुझे कोलकाता शहर, अपना कार्यालय, अपने साथियों एवं अपने संरक्षकों से विदा लेना पड़ा जो मेरे लिए मुश्किल हो रहा था। मेरी आंखों से झर-झर आँसू बह रहे थे। मुझे आज भी वह दिन याद है, जब मैं ऑफिस में रो रही थी और अपना ट्रांसफर लेटर पकड़ने की भी हिम्मत नही हो रही थी। सभी लोग मुझे हंसाने में लगे थे। मेरे साथ रहने वाली मेरी दोस्त भी कह रही थी कि रूक जाओ। अगले साल चली जाना, किन्तु मेरा परिवार मेरी राह देख रहा था कि कब पास आए और हम से मिल सके तो सबसे विदा लेकर आ गई।

इसके बाद मेरी एक नई यात्रा प्रारम्भ हुई। कोलकाता से, मैं सीधे अपने घर जयपुर गई। परिवार से मिली, उनकी खुशी देखने लायक थी। इसके बाद फिर चली नए शहर, नए लोग, नया माहौल, आगरा शहर, जहां विश्व के सात अजूबों में से एक अजूबा एवं मोहब्बत का प्रतीक ताजमहल स्थित है। आगरा जाते समय फिर वही नई उमंग, नए माहौल, नए लोगों का डर मन में था। खैर, मैं आगरा पहुंची, सच कहूँ तो शहर देखकर वापिस भाग जाने का मन किया परन्तु फिर भी अपने कार्यालय में गई। वहां का माहौल एकदम अलग और अजीब लग रहा था। कोलकाता के कार्यालय से एकदम अलग माहौल था। कार्यालय में मुझे ज्वॉइन कराया गया और सबसे मिलवाया गया। यहां मैं ज्वाइन करके वापिस आ गई भरतपुर, जहां मेरे मामाजी रहते हैं और यह आगरा के पास में ही है। इसके बाद ऑफिस के साथियों ने मुझे घर ढूंढने में मदद की और मैं आगरा में रहने लगी। खैर, ढेर सारी परेशानियों का सामना करते हुए, मैं आगरा को अपनाने की कोशिश करने लगी और प्रत्येक शनिवार को यात्रा कर जयपुर जाना और सोमवार की सुबह वापिस आगरा आना मेरी यात्रा में शामिल हो गया।

आगरा में पोस्टिंग के दौरान बहुत खट्टे-मीठे पल जीये, बहुत सी यादें संजोई। इसी दौरान मैं भारत के कई हिस्सों में घूमी, क्योंकि यहां मुझे मेरे जैसे ही दोस्त मिले, हम सभी प्लान करके निकल जाते थे। सबसे ज्यादा पहाड़ों पर घूमी। पहाड़ों की हरी-भरी वादियों में सुकून, शान्ति और खुशी ढूंढते रहते। आज लगता है कि वे पल जीवन के सबसे बेहतरीन पल थे। दोस्तों के साथ बिन्दास होकर घूमना, दोस्तों से थोड़ी जिद कर लेना। ये सिर्फ अच्छे दोस्तों के साथ ही संभव है। ऐसे ही अपनी जीवन और बैंक सेवा यात्रा के साथ मैंने दूरियों वाली यात्राएं की। इन विभिन्न प्रकार की यात्राओं के साथ आगरा में कब मेरे 5 साल निकल गए, पता ही नहीं चला। जब आगरा शहर और आगरा के कार्यालय से विदा लेने का समय आया तो मन एक बार फिर वही चिरपरिचित आशंकाओं, डर और दुःख के साथ घबरा गया। एक बार फिर नई यात्रा, नई दुनिया, नया शहर, नए लोग और नए कार्यालय से सामना होने जा रहा था। इस बार मेरे आगरा वाले साथियों ने मुझे भारी मन से मेरठ के लिए विदा

किया। सभी साथियों के मन में कसक थी कि एकबार फिर मैं अपने घर न जाकर, नए शहर में जा रही थी। सभी ने मुझे जल्दी ही अपने घर, अपने शहर पहुंचने हेतु शुभकामनाएं दी। मैंने भी उनके अथाह प्यार, अपनेपन और सहयोग के लिए धन्यवाद देकर फिर कहीं मिलेंगे के वादे के साथ विदा ली।

एक बार फिर निकल पड़ी, अपने नए सफर पर, उफ्फ! नई यात्रा। इस बार एक तसल्ली थी कि अब पहले के जैसा नहीं है कि नई जगह के बारे में कुछ भी न मालूम हो। अपने कार्यालय और नए शहर के बारे में मुझे अपने बैंक के साथियों से बहुत कुछ मालूम चल गया था। ऐसा भी नहीं था कि जहां जा रही हूँ, वहां कोई जान-पहचान वाला नहीं है। आगरा की ही एक साथी, जो कि पदोन्नत होकर मेरठ कार्यालय में स्थानान्तरित हुई थी, वह मेरा इंतजार कर रही थी। जब मैं मेरठ कार्यालय पहुंची तो मेरी दोस्त ने मेरा स्वागत किया और सबसे मिलवाया। यहां मुझे पिछली दो पद स्थापनाओं की तरह अजीब नहीं लग रहा था, शायद यह मेरे अनुभवी होने का प्रमाण था। मेरी दोस्त ने मुझे अपने साथ ही रखा कि बहुत दिनों बाद मिले है, साथ रहेंगे। लगभग एक सप्ताह मैं अपनी दोस्त के साथ रही और इसी बीच अपने रहने लिए नया ठिकाना भी ढूंढती रही, जो कि मुझे मिल गया और मैंने जल्द ही शिफ्ट भी कर लिया। इस तरह एक नए शहर एवं नए कार्यालय का अनुभव मुझे प्राप्त होने लगा। नए लोग मिले और मेरा सौभाग्य था कि मुझे यहां भी बहुत अच्छे लोग मिले। यहां मुझे पड़ोसी के रूप में अपनत्व एवं स्नेह से भरा परिवार मिला, जिन्होंने अपने पारिवारिक सदस्य की तरह मेरा ख्याल रखा। इस प्यारे से परिवार ने मुझे कभी अकेलापन महसूस नहीं होने दिया। कार्यालय में भी मुझे कभी कोई परेशानी नहीं हुई।

मेरठ शहर में पोस्टिंग के दौरान ही एक अन्य नई यात्रा की शुरूआत हुई जो कि सभी के जीवन की एक महत्वपूर्ण यात्रा होती है जो कि वैवाहिक जीवन है। हाँ, मेरे माता-पिता द्वारा की जा रही दामाद की तलाश पूरी हुई और उन्होंने मेरे हाथ पीले कर लाल जोड़े के साथ एक नई जीवन यात्रा के लिए विदा किया। खैर, इस बारे में फिर कभी बात करेंगे। अभी तो बैंक में मेरी सेवा यात्रा की बात की जा रही है। मेरठ में मुझे अपने आप के साथ समय बिताने मौका मिला क्योंकि कोविड-19 कोरोना वायरस महामारी जिसने पूरे विश्व में हाहाकार मचा रखा था, के कारण भारत में राष्ट्रीय लोकडॉउन हो गया, जिससे मेरी साप्ताहिक यात्रा पर विराम लग गया और मुझे मजबूरी वश अवकाश के दौरान अकेले अपने फ्लैट पर रहना पड़ता था। वैसे मैंने हमेशा की तरह इसे भी एंजाय किया। अवकाश वाले दिन अपने स्कूल, कॉलेज के पुराने दोस्तों से बातें की एवं कुछ नये अनुभव जाने। अभी तो मेरठ शहर और कार्यालय में मेरा दाना पानी है तो यहीं हूँ। पता नहीं, यहां से कब मुझे नई यात्रा के लिए निकलना पड़े और नई जगह और नए दोस्तों से मुलाकात हो। बस यहीं आशा करती हूँ कि जहां जाऊं, मुझे ऐसे ही अच्छे लोग मिलते रहे और मैं संगी-साथियों का कारवां बनाती जाऊँ।

इसी के साथ नई यात्रा के पश्चात् फिर रूबरू होऊंगी, आपसे।

> जिसकी हम अभिलाषा करते हैं और जिसकी सिद्धि के लिए सम्पूर्ण अन्तःकरण से प्रयत्न करते हैं, तो उसकी प्राप्ति हमें अवश्य होती है।
>
> **-स्वैट मार्डन**

जब मयकदे से निकला मैं राह के किनारे: रांगेय राघव

कुलवेन्द्र सिंह
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, आगरा

एक लंबे अरसे तक भारत की राजधानी रहा आगरा साहित्य सर्जकों की भूमि रहा है, एक से बढ़कर एक कथाकार, कवि, आलोचकों ने यहाँ जन्म लिया और कुछ यहाँ आकर बस गए और फिर यहीं के होकर रह गए, साहित्य यहाँ खूब फला-फूला, जनसाधारण के शायर नजीर इसकी शान में अर्ज करते हैं।

शहरे सुखुन में अब जो मिला हैं मुझे मकां।
क्यूं कर न अपने शहर की खूबी करूं बयां।।
देखी है आगरे में बहुत हमने खूबियां।
हर वक्त इसमें शाद रहे हैं जहाँ तहाँ।।
"नजीर अकबराबादी"

आगरा की ऐतिहासिक और साहित्यिक भूमि पर रांगेय जी का जीवन पुष्पित एवं पल्लवित हुआ। साहित्य और इतिहास का यह समन्वय रांगेय जी के कथा संसार में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। पौराणिक और ऐतिहासिक उपाख्यानों को नवीन परिदृश्यों की चाशनी से तरंगित कर रांगेय जी ने अपने अनूठे कथा संसार की सृष्टि की है, जो पाठक के मन को बांधे भी रखता है और भारतीय मनीषियों के ज्ञान से परिचित भी कराता है। इस प्रकार साहित्य के लौकिक और अलौकिक दोनों ही प्रयोजनों की पूर्ति होती है। रांगेय जी ने हिंदी के काव्य एवं कथा दोनों को समृद्ध किया किन्तु दुर्भाग्यवश यह समृद्धि उनके जीवन को धन-संपन्न नहीं बना सकी। धन के अभाव में उन्होंने कभी अपनी पुस्तकों के कॉपीराइट अत्यंत अल्प धनराशि में बेचे ('कब तक पुकारूँ' के कॉपीराइट मात्र 1500 रु. में बेचे गए), कभी अनुवाद कार्य किया, कभी समाजशास्त्र पर पुस्तकें लिखीं यहाँ तक कि पत्नी के आभूषण तक बेचने पड़े, असाध्य रोग के इलाज के लिए मुंबई जाते समय विवाह में प्राप्त हुए चांदी के बर्तन भी बेचने पड़े थे किन्तु कोई भी अभाव उनकी साहित्य समाधी को भंग नहीं कर सका।

साहित्य में ऐसे उदाहरण विरले ही मिलते हैं, जिन्होंने काव्य की मधुमय निर्झरणी भी बहाई हो और कथा का अथाह सागर भी परिपूरित किया हो। रांगेय राघव ऐसे ही विरले रचनाकारों में से एक थे। इन्होंने काव्य और कथा दोनों ही विधाओं में हिंदी की श्री में वृद्धि की। आप एक उच्च कोटि के उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार, आलोचक, नाटककार, कवि, रिपोर्ताज लेखक थे।

रांगेय जी का पूरा नाम तिरूमल्लै नंबाकम वीर राघव आचार्य था, आपका जन्म 17 फरवरी सन् 1923 में राजस्थान के भरतपुर जिले के कुम्हेर नामक कस्बे के निकट 'वैर' नामक ग्राम में हुआ। बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के उचित प्रबंध हेतु आपके पिता श्री रंगनाथ राघवाचार्य जी आगरा के मुजफ्फर खां मुहल्ले में रहने लगे। विद्यासंपन्न परिवार के संस्कारवश स्वाभाव से आप अध्ययन के प्रति आसक्त थे। रांगेय जी बचपन से ही व्युत्पन्नमति थे परिवार के सदस्य यह कहकर चिढ़ाते थे कि पप्पू को भैंस का दूध / छाछ पिलाओ ताकि इसकी बुद्धि कुछ भारी हो और शरीर के साथ चले। उनकी बुद्धि इतनी प्रखर थी कि जितने समय में कोई पुस्तक पढ़ेगा उतने में वे लिख सकते थे। रांगेय राघव जी की प्राथमिक शिक्षा आगरा के सेंटजॉन्स विद्यालय एवं विक्टोरिया विद्यालय में हुई। आपने पं. श्री बालेश्वर शास्त्री जी से संस्कृत की शिक्षा ली। श्री बालेश्वर शास्त्री से परास्नातक पास करने तक आप संस्कृत का अध्ययन करते रहे। रांगेय राघव जी ने आगरा के सेंटजॉन्स कॉलेज से हिंदी विषय में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की। रांगेय जी ने हजारी

प्रसाद द्विवेदी जी के निर्देशन में शांति निकेतन से "गुरु गोरखनाथ / भारतीय मध्ययुग के संधिकाल का मनन" विषय पर शोध कार्य किया। यह शोध कार्य रांगेय जी की इतिहास, पुराण, भारतीय चिंतन पर विशेष पकड़ बनाने में सहायक हुए। आपका हिन्दी, अंग्रेजी, ब्रज, संस्कृत भाषा पर समान अधिकार था। रांगेय जी इन्द्रधनुषी प्रतिभा से संपन्न व्यक्ति थे उनमें संगीत, पुरातत्व, चित्रकारी की नैसर्गिक प्रतिभा थी और समाजसेवा उनका नैसर्गिक गुण था। रांगेय जी ने सन् 1938 में कविताएँ लिखना प्रारंभ किया। आपकी कविताएँ बड़ी सरस हैं:

जब मयकदे से निकला मैं राह के किनारे
मुझ से पुकार बोला प्याला वहां पड़ा था,
है कुछ दिनों की गर्दिश, धोखा नहीं है लेकिन
इस धुल से न डरना, इसमें सदा सहारा।
मैं हार देखता था वीरान आसमाँ को
बोले तभी नजूमी मुझसे; नहीं भटक तू
है कुछ दिनों की गर्दिश, धोखा नहीं है लेकिन
जो आँधियों ने फिर से अपना जुनूँ उभारा।
मैं पूछता हूँ सब से-गर्दिश कहाँ थमेंगी
जब मौत आज की है दिकल है जिन्दगी के
धोखे का डर करूँ क्या रुकना न जब कहीं है-
कोई मुझे बता दो, मुझ को मिले सहारा!

-**"रांगेय राघव"**

'अजेय खण्डहर' रांगेय जी की पहली काव्य कृति है। यह द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान रूस पर हुए नाजी हमले पर आधारित है। आपने 'पिघलते पत्थर', 'मेधावी', 'राह के दीपक', 'पांचाली', 'रूपछाया' आदि प्रबंधकाव्य भी रचे हैं।

रांगेय जी का काव्य अत्यंत परिष्कृत होते हुए भी उनके अन्दर का कथाकार कवि पर भारी था। रांगेय जी प्रेमचंदोत्तर युग के कथाकार थे। रांगेय जी ने अपने जीवनकाल में लगभग 200 कहानियां लिखीं, जिनमें से कुछ 'हंस' नामक पत्र में भी प्रकाशित हुईं। 'साम्राज्य का वैभव', 'देवदासी', 'समुद्र के फेन', 'अधूरी मूरत', 'जीवन के दाने', 'अंगारे न बुझे', 'ऐयाश मुरदे', 'इन्सान पैदा हुआ', 'पाँच गधे', 'एक छोड़ एक' आदि उनके प्रमुख कहानी संग्रह हैं।

रांगेय जी ने अनेक उपन्यास लिखे जो आज भी प्रासंगिक हैं। उनके द्वारा लिखे गए 'घरोंदा' और 'मुर्दों का टीला' कालातीत उपन्यास हैं। अन्य प्रसिद्ध उपन्यासों में चीवर, अँधेरे के जुगनू, राह न रूकी, पक्षी और आकाश, देवकी का बेटा, लोई का ताना, यशोधरा जीत गई, रत्ना की बात, भारती का सपूत, द्रोणाचार्य, लखिमा की आँखें, धूनी का धुआं, मेरी भव बाधा हरो, कब तक पुकारूँ, राई और पर्वत, धरती मेरा घर, जब आवेगी काली घटा, अंधी की नींव, छोटी सी बात, बंदूक और बीन, प्रोफेसर, विषाद मठ, सीधा साधा रास्ता, हुजूर, प्रतिदान, बौने और घायल फूल, पथ का पाप, आग की प्यास, कल्पना, दायरे, पतझड़, आखिरी आवाज आदि प्रमुख हैं।

उन्होंने स्वर्णभूमि की यात्रा, रामानुज, विरूढ़क नाटक और तूफानों के बीच नामक रिपोर्ताज भी लिखा है। भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका, भारतीय संत परंपरा और समाज, संगम और संघर्ष, प्राचीन भारतीय परंपरा और इतिहास, प्रगतिशील साहित्य के मानदंड, समीक्षा और आदर्श, काव्य यथार्थ और प्रगति, काव्य कला और शास्त्र, महाकाव्य विवेचन, तुलसी का कला शिल्प, आधुनिक हिंदी कविता में प्रेम और श्रृंगार, आधुनिक हिंदी कविता में विषय और शैली, गोरखनाथ और उनका युग उनके प्रमुख आलोचना ग्रंथ हैं।

रांगेय जी ने भारती की जो सेवा की उसके पारितोषिक के रूप में हिंदी साहित्य में उनका नाम अमिट और कीर्ति अमर है। तथापि संस्थानों एवं संस्थाओं ने रांगेय जी को विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया, जिनमें से कुछ प्रमुख निम्न प्रकार से हैं:

1. प्रबंध काव्य 'मेधावी' को सन् 1947 में 'हिन्दुस्तानी अकादमी' द्वारा सम्मानित किया गया। (मात्र 24 वर्ष की आयु में उन्हें यह पुरस्कार प्राप्त हुआ)
2. उनकी शोधपरक और व्याख्यात्मक पुस्तक 'भारतीय परंपरा और इतिहास' को सन् 1954 में 'डालमिया' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
3. उनके ऐतिहासिक उपन्यास 'पक्षी और आकाश' को भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया।
4. उत्तर-प्रदेश सरकार ने उनके उपन्यास 'कब तक

पुकारूँ' को सन् 1975 में सम्मानित किया।

5. उनके कहानी संग्रह 'मेरी प्रिय कहानियां' को सन् 1969 में 'राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

रांगेय जी ने साधारण जीवन शैली अपनाते हुए असाधारण श्रमसाध्य जीवन व्यतीत किया, जिससे वे असाध्य रोग से पीड़ित हो गए। दीर्घ अवधि तक बीमार रहने के बाद मुंबई में 12 सितंबर सन् 1962 को उन्होंने इस भौतिक संसार को त्याग दिया। रांगेय जी को 'क्लासिकल लेखक' कहा जाता है, साहित्य के संबंध में उनका विचार था कि, "साहित्य एक सामाजिक धरोहर है, जहाँ एक ओर वह समाज की देन है, दूसरी ओर वह समाज के स्वरुप का निर्माण करता है" उनका साहित्य रिझाने के स्थान पर 'सर्वजन हिताय' को अपना ध्येय मानता है। अल्प आयु में ही उन्हें इस संसार को अलविदा कहना पड़ा किन्तु उनके द्वारा लिखा गया साहित्य परिमाण में सीमित होते हुए भी उन्हें हिंदी के उत्कृष्ट लेखकों के सानिध्य ला खड़ा करता है। वे हिंदी के प्रमुख आधार स्तम्भ हैं और हिंदी के सुधी पाठकों के मध्य हमेशा चर्चा का विषय रहेंगे।

(साभार: रांगेय जी किए गए पर विभिन्न शोध प्रबंध)

कब तक

दिव्येश घेडिया
विशेष सहायक

मुश्किलें यूं ही आएंगी,
पर जीवन संग्राम में डटे रहें।
हमें, जान रहेगी जब तक,
वक्त के साथ बदलना सीखें,
मायूस रहेंगे कब तक।
कृषक वृष्टि की राह तकता है,
सूखा रहेगा कब तक।
जमकर बरसेगा व्योम से इक दिन,
जल मेघों में भरा है जब तक।
दुनिया जीतने निकला सिकंदर,
पर जीतता रहता कब तक।
धोखा-हार सबक हैं कठिन राहों के,
चलते रहोगे जब तक।
जीवन नित-नया सबक देता है,
सीखते रहोगे तब तक।
तालीम जीवन की न पूरी होगी,
पढ़ते रहोगे जब तक।
संघर्ष की लौ सभी के दिलों में,
जिंदा रहेंगी तब तक।
इस दुनिया में अहसास खुदा के,
होने का रहेगा जब तक।

दिव्येश घेडिया
विशेष सहायक
राजकोट, शापर शाखा

निकला है

आज एक बच्चा मुठ्ठी में,
एक सिक्का लेकर निकला है।
उसको कीमत क्या मालूम,
दुनिया खरीदने निकला है।
उस मजदूर की मजबूरी है,
काम की तलाश में निकला है।
घर की जिम्मेदारी सर पर है,
वह कड़ी धूप में निकला हैं.
पुरानी यादों को पीछे छोड़,
वह नए सफर पर निकला है।
कोशिश उनको भुलाने की,
जो बड़ा बेकार निकला है।
इतना भी भरोसा ठीक नहीं,
अब ऐसा दौर भी निकला है।
दोस्त माना था जिस को मैंने,
कमबख्त! वही मेरा दुश्मन निकला है।

मेरे पसंदीदा शिक्षक एवं मैं

मोहम्मद शादाब
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, मेरठ

मेरा पसंदीदा शिक्षक कोई एक नहीं है बल्कि हर वह व्यक्ति है जिसने मुझे जीवन में कुछ न कुछ अच्छा सिखाया, समझाया और सही राह दिखायी। मेरी प्रथम शिक्षिका मेरी माँ है, जिसने मुझे सही राह पर चलना सिखाया। मेरे पिता भी मेरे शिक्षक हैं जिन्होंने मुझे जीवन की हर अच्छी-बुरी चीज से परिचय कराया तथा मुझे समाज में एक सभ्य व्यक्ति के रूप में स्थापित करने के लिए न केवल खुद विभिन्न कठिनाइयों का सामना किया वरन् मुझे भी कठिनाईयों से सामना करना सिखाया। माता-पिता की दी हुई शिक्षाओं के साथ-साथ प्राइमरी कक्षा से वकालत तक की शिक्षा प्रदान करने वाले मेरे शिक्षकों ने भी मुझे अमूल्य ज्ञान एवं शिक्षाएं दी है जिनकी बदौलत में आज समाज में अपने पैरों पर खड़ा हो पाया हूँ। मेरे ये सभी शिक्षक भी मेरे पसंदीदा शिक्षक है।

इसके अतिरिक्त मेरे व्यावसायिक जीवन में मुझे वकालत की बारीकियां सिखाने वाले मेरे गुरू भी मेरे पसंदीदा शिक्षक है, जिन्होंने एक छात्र को तराशकर, उसको समाज में अपनी पहचान बनाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने मुझे सिखाया कि वकालत का पेशा धन कमाने के लिए ही नहीं है, बल्कि इसमें पीड़ित को न्याय दिलाना एवं सम्मान अर्जित करना भी हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए। इससे मुझे मेरी सामाजिक जिम्मेदारी का अहसास हुआ तथा वकालत की शिक्षा का महत्व व उद्देश्य ज्ञात हुआ एवं मेरे नैतिक मूल्यों में बढ़ोत्तरी हुई।

मेरे शिक्षकों में एक अहम शिक्षक मेरा प्रिय बैंक तथा मेरे बैंक के मेरे उच्चाधिकारी व मेरे सहकर्मी भी हैं जिन्होंने मुझे बैंक कार्यालय की कार्य-शैली सिखाई तथा मेरे हर कार्यकलाप को सुव्यवस्थित करने में मेरा हर संभव सहयोग किया। मुझे एक कर्मनिष्ठ बैंककर्मी के रूप में स्थापित किया। बैंक ने मुझे समाज में पहचान के साथ-साथ, आर्थिक तौर पर भी सुदृढ़ बनाया तथा विभिन्न स्थानों पर विभिन्न प्रकार की जिम्मेदारियां देकर मेरे व्यक्तित्व को निखारा तथा मुझे व्यवसायिक व निजी जीवन में भी जिम्मेदारियां उठाने लायक बनाया है।

मेरे पसंदीदा शिक्षकों में एक अहम स्थान धर्म का भी है, जिसने मुझे सही व गलत एवं अच्छे व बुरे की शिक्षा दी। अपने माता-पिता, भाई-बहिन और बीवी-बच्चों के प्रति तथा समाज के प्रति अपने दायित्वों के बारे में बताया जिससे मेरा सही तरीके से समाज के लिए उपयोगी जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त हुआ। पैगम्बर मुहम्मद साहब ने बताया है कि "अल्लाह की नजर में सर्वोत्कृष्ट सहचर वह है, जो अपने सहचरों के लिए सर्वोत्कृष्ट हो और सबसे अच्छा पड़ोसी वह है, जो अपने पड़ोसियों के लिए अच्छा हो।"

उक्त सभी के अलावा मेरी सबसे बड़ी शिक्षक मेरी अपनी जिन्दगी है जिसने मुझे जीवन के कई अहम पाठ पढ़ाएं। कई अच्छे-बुरे अनुभव देकर समाज से रूबरू कराया। कई बार कुछ कठिन सबक भी जीवन से मिले। कई बार गिरा, संभला और फिर उठा, परन्तु कभी अपने पथ से विचलित नहीं हुआ एवं कभी अपने मूल्यों को नहीं छोड़ा। जीवन वास्तव में कुदरत का दिया हुआ एक अनमोल तोहफा है परन्तु साथ ही साथ यह अपने आप में कई चुनौतियां भी लिए हुए है। जीवन की इसी जद्दोजहद को किसी शायर ने अपने शब्दों में कुछ यूँ बयां किया है:

जिन्दगी ने इसी फरेब में रखा है उम्र भर,
बस इस इम्तिहां के बाद...... कोई इम्तिहाँ नहीं।

ठीक ही कहा है, जब हम सोचने लगते हैं कि अब हमारी सभी कठिनाइयाँ समाप्त हो गई हैं तभी जिन्दगी एक नया अध्याय खोलकर सामने रख देती है। लेकिन सामान्य शिक्षक एवं जीवन की शिक्षा में एक अहम फर्क होता है, "शिक्षक सिखाकर इम्तिहान लेता है और जीवन इम्तिहान लेकर शिक्षा देता है।"

इसके अलावा एक व्यक्ति जब तक जीवित रहता है तब तक वह किसी न किसी से कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। किन्तु विद्वानों का कहना है कि व्यक्ति यदि केवल स्वयं के अनुभवों से सीखेगा तो उसके लिए एक जीवन भी कम पड़ जाएगा। इसीलिए कहा जाता है कि व्यक्ति का एक शिक्षक इतिहास भी होता है। अंग्रेजी की एक कहावत है:

"Those who do not learn history are doomed to repeat it"

इसलिए हमें अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय, दूसरों के अनुभवों को दृष्टिगत रखते हुए भी लेने चाहिए तथा अपने जीवन की सीख को दूसरों को भी बताना चाहिए ताकि दूसरे व्यक्ति भी आपके अनुभवों के आधार पर अपने जीवन में निर्णय ले सके तथा सम्भावित कठिनाईयों से बच सकें।

सही बात तो यह है कि हमारा काम केवल शिक्षित होना या सीखना ही नही है, अपितु हमें स्वयं भी एक शिक्षक की भूमिका निभानी चाहिए। यह अपनों के प्रति एवं समाज के प्रति हमारा दायित्व भी है और कर्तव्य भी। वैसे भी कहा जाता है कि ज्ञान बांटने से बढ़ता है। इसलिए इस जीवन में हम सब छात्र भी है और शिक्षक भी।

अतः मेरे पसंदीदा शिक्षक केवल वे नहीं है, जिन्होंने मुझे अच्छी शिक्षा दी, अपितु वे सभी शिक्षक भी मेरे पसंदीदा शिक्षक है, जो दूसरों को ज्ञान देते है तथा अच्छी बातें सिखाते है और दूसरों के जीवन का निर्माण करते है। वे सभी महान है तथा सम्मान के पात्र है तथा मेरे पसंदीदा शिक्षक है।

गुरू अमृत है जगत में, बाकी सब विषबेल,
सतगुरू संत अनंत है, प्रभु से कर दे मेल।

विरह

पतझड़ का सा मौसम आया,
ए री सखी बदरी तू क्या?
अंधड़, आंसू, आंखे काली,
रूखी धरती क्या?
दिन को सूरज तपता रहता,
रात है काली दोजक क्या?
जाग रहा मैं जग सोया है,
चाँद है साला सूरज क्या है?
शाम हुई मधुशाला जैसी,
तू थी तुम बिन जीवन क्या?
गजलें खाली ताना लगती,
बिन सुर ताल के महफिल क्या?
कर्कश सारे लोग मिले हैं,
कोयल करुई सुनती क्या?
हृदय आंगन पट खोल खड़े हैं,
विरह रुदाली सुनती क्या?

पुष्पेन्द्र सिंह
प्रबंधक
अंचल कार्यालय, उदयपुर

नृत्य

बागों में उस दिन मोर नाचे, उसके मन में भी
ज्वार से आए थे, और एक शैतान जागा।
जागा वो, मन ही मन में, उस मोर को देख के
पंखों में इतने रंग, इसके भी मन में सारे
बादलों को देख के नृत्य करता तो, ये भी इधर
बारिश के इंतजार में, सब्र के बांध को कर बस में
बांधे ये भी समा, कलाओं से, अपनी बातों से
बदरी को रिझाने, नाचे दोनों ही अंदाज में अपने

आभासी दुनिया से मुक्ति

प्रतीक अग्रवाल
वरिष्ठ प्रबंधक
अंचल कार्यालय, मेरठ

शौर्य अपनी अंगुलियां तेजी से अपने नए मोबाइल पर चला रहा था। उसके पापा ने अभी कुछ दिन पहले नया स्मार्ट फोन दिलाया था। लैपटॉप तो पहले ही था, पर अब नया स्मार्ट फोन आने से और भी ज्यादा समय सोशल मीडिया पर देने लगा था।

फेसबुक, व्हाट्सअप, ट्विटर आदि चलाते-चलाते उसका सारा दिन यूं ही बीत जाता था। कोरोना के चलते स्कूल की पढ़ाई भी ऑनलाइन ही हो जाती थी। बाकी समय स्मार्ट फोन पर कट ही जाता था। बारहवीं की बोर्ड परीक्षा का समय नजदीक आ रहा था। शौर्य चिंतत तो था कि परीक्षा में अच्छे अंक लाना है, और मां-पिता का नाम रोशन करना है, किन्तु मोबाइल शुरू होते ही कब समय निकल जाता, पता ही नहीं चलता।

आज शौर्य ने सोच लिया था कि कुछ भी हो वह आज रातभर पढ़ाई करेगा और परीक्षा की तैयारी करेगा। इधर शौर्य ने जैसे ही मोबाइल रखा और किताब उठाई, वैसे ही आँखों में नींद की खुमारी छाने लगी। जब नींद का प्रकोप फिर से बढ़ने लगा, तो सोचा थोड़ी देर मोबाइल में गेम खेल लेता हूँ, तो नींद भाग जाएगी।

एक गेम मोबाइल पर खेला ही थे कि देखा कि उसका सहपाठी नितिन भी ऑनलाइन है। फटाफट व्हाट्सएप पर उसने टाइप किया-

शौर्य- "हाय दोस्त, क्या हाल है?"

नितिन- "भाई मैं बढ़िया हूँ, तू बता क्या हाल-चाल है? घर पर सब कैसे हैं?"

शौर्य- "यहां सब बढ़िया चल रहा है, पर सारा दिन नए स्मार्टफोन पर गुजर जाता है। परीक्षा भी नजदीक है। सोच रहा हूँ, पढ़ाई शुरू कर दूँ।"

नितिन- "हां भाई, यह तो है, परीक्षा बहुत नजदीक है। मैंने तो अपना कोर्स एक बार खत्म कर लिया है। अब कल से रिवीजन शुरू करना है। वैसे भी मैं अपने पड़ोस के एक लड़के को ट्यूशन पढ़ाता हूँ, तो मेरा रिवीजन होता रहता है।"

शौर्य- "क्या? तुम ट्यूशन भी पढ़ाते हो और कोर्स भी खत्म कर चुके हो और अब रिवीजन की भी सोच रहे हो। अरे यार इतना समय मिल कैसे जाता है, तुम्हे?"

नितिन- "भाई, मैं अपना समय इन्टरनेट एवं सोशल मीडिया पर बर्बाद नहीं करता हूँ। इन्टरनेट का उपयोग केवल पढ़ाई के लिए ही करता हूँ, तो काफी समय बच जाता है।"

शौर्य ने जैसे ही सुना, तो उसे लगा कि उसके दिल में बहुत तेज दर्द हुआ है। ऐसा लगा मानो हजारों सुईयां छाती में घुसी हुई हो। अचानक उसने देखा कि एक विशालकाय किताब कहीं से प्रकट हुई और उसकी छाती पर दोनों हाथों से दवाब बनाने लगी। किताब कुछ वैसा ही कर रही थी, जैसे डॉक्टर हृदयाघात के रोगी के सीने पर पम्प करते हैं। शौर्य देखता है कि विशाल किताब के दवाब से उसके अंदर से सारे सोशल मीडिया एप्प निकलते जा रहे है, और वह बहुत अच्छा महसूस कर रहा है।

एकदम से उसकी नींद टूटी, तो देखा मम्मी उसको हिलाकर जगा रही है। पसीने से तर बतर शौर्य अपनी माँ से लिपट गया और बोला- "मां, मैंने बहुत बुरा सपना देखा और मैं अब मोबाइल ना चलाकर परीक्षा की तैयारी पूरे मन से करूंगा।"

मां मन्द-मन्द मुस्कुरा रही थी और बाहर सूरज की किरणों का प्रकाश फैल रहा था।

रानी की वाव

रानी की वाव की संक्षिप्त जानकारी एक नजर में-

कहां स्थित है :- पाटन जिला, गुजरात (भारत)

कब हुआ निर्माण :- 1063 ईसवी में

किसने करवाया निर्माण :- रानी उदयमति (सोलंकी राजवंश की रानी)

वास्तुकला :- मारू-गुर्जर स्थापत्य शैली

प्रकार :- सांस्कृतिक, बावड़ी

युनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल :- 22 जून 2014

रानी की वाव का निर्माण एवं इसका इतिहास-

अपनी अनूठी वास्तुशैली के लिए विश्व भर में मशहूर यह विशाल रानी की वाव गुजरात के पाटन शहर में स्थित है। इस भव्य बावड़ी का निर्माण सोलंकी वंश के शासक भीमदेव की पत्नी उदयमति ने 10वीं-11वीं सदी में अपने स्वर्गवासी पति की स्मृति में करवाया था। करीब 1022 से 1063 के बीच इस 7 मंजिला बावड़ी का निर्माण किया गया था।

आपको बता दें कि सोलंकी राजवंश के शासक भीमदेव ने वडनगर गुजरात पर 1021 से 1063 ईसवी तक शासन किया था। अहमदाबाद से करीब 140 किलोमीटर की दूरी पर बनी यह ऐतिहासिक धरोहर रानी की वाव प्रेम का प्रतीक मानी जाती है।

ऐसा माना जाता है कि इस अनोखी बावड़ी का निर्माण पानी का उचित प्रबंध करने के लिए किया गया था, क्योंकि इस क्षेत्र में वर्षा बेहद कम होती थी। जबकि कुछ लोक कथाओं के मुताबिक रानी उदयमती ने जरूरतमंद लोगों को पानी प्रदान कर पुण्य कमाने के उद्देश्य से इस विशाल बावड़ी का निर्माण करवाया था।

सरस्वती नदी के तट पर स्थित यह विशाल सीढ़ीनुमा आकार की बावड़ी कई सालों तक इस नदी में आने वाली बाढ़ की वजह से धीमे-धीमे मिट्टी और कीचड़ के मलबे में दब गई थी, जिसके बाद करीब 80 के दशक में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने इस जगह की खुदाई की। काफी खुदाई करने के बाद यह बावड़ी पूरी दुनिया के सामने आई।

अच्छी बात यह रही कि सालों तक मलबे में दबने के बाद भी रानी की वाव की मूर्तियां, शिल्पकारी काफी अच्छी स्थिति में पाए गए।

रानी की वाव की अद्भुत बनावट एवं संरचना

गुजरात में स्थित "रानी वाव" 11 वीं सदी की वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। इस बावड़ी का निर्माण मारू-गुर्जर स्थापत्य शैली का इस्तेमाल कर किया गया है। जल संग्रह प्रणाली के इस नायाब नमूने को इस तरह बनाया गया है कि इसमें यह जल संग्रह की उचित तकनीक, बारीकियों और अनुपातों की अत्यंत सुंदर कला क्षमता की जटिलता को बेहतरीन ढंग से प्रदर्शित करती हैं।

सीढ़ियों वाली इस भव्य बावड़ी की पूरी संरचना भू-स्तर के नीचे बसी हुई है, जिसकी लंबाई करीब 64 मीटर, चौड़ाई करीब 20 मीटर है, जबकि यह 27 मीटर गहरी है। यह अपने समय के सबसे प्राचीनतम और अद्भुत स्मारकों में से एक है। इस बावड़ी की दीवारों पर बेहतरीन शिल्पकारी और सुंदर मूर्तियों की नक्काशी की गई है।

इसके साथ ही इस विशाल बावड़ी की सीढ़ियों पर बनी उत्कृष्ट आकृतियां यहां आने वाले सैलानियों का मन मोह लेती हैं। आपको बता दें कि अपने प्रवेश द्वार से

लेकर अपनी गहराई तक यह अनूठी बावड़ी पूरी तरह से उत्कृष्ट शिल्पकारी से सुसज्जित है। इस विशाल बावड़ी की अद्‌भुत संरचना और अद्वितीय शिल्पकारी अपने आप में अनूठी है।

सबसे खास बात यह है कि यह बावड़ी बाहरी दुनिया के कटे होने की वजह से काफी अच्छी परिस्थिति में है।

भगवान विष्णु से संबंधित है बावड़ी की मूर्तियां और कलाकृतियां:

सीढ़ियों वाली सात मंजिलीं इस अनूठी बावड़ी की दीवारों पर सुंदर मूर्तियां और कलाकृतियों की अद्‌भुत नक्काशी की गई है। इस अनूठी बावड़ी में 500 से ज्यादा बड़ी मूर्तियां हैं, जबकि 1 हजार से ज्यादा छोटी मूर्तियां हैं। औधें मंदिर के रूप में डिजाइन की गई इस बावड़ी में भगवान विष्णु के दशावतारों की मूर्तियां बेहद आर्कषक तरीके से उकेरी गई हैं।

यहां विष्णु भगवान के नरसिम्हा, वामन, राम, वाराही, कृष्णा समेत अन्य प्रमुख अवतार की कलाकृतियां उकेरी गईं हैं। इसके अलावा इस विशाल बावड़ी में माता लक्ष्मी, पार्वती, भगवान गणेश, ब्रह्मा, कुबेर, भैरव और सूर्य समेत तमाम देवी-देवताओं की कलाकृति भी देखने को मिलती है।

इसके अलावा इस भव्य बावड़ी पर भारतीय महिला के 16 श्रृंगारों को परंपरागत तरीके से बेहद शानदार ढंग से दर्शाया गया है। यहीं नहीं इस बावड़ी के अंदर कुछ नागकन्याओं की भी अद्‌भुत प्रतिमाएं देखने को मिलती है। 100 रुपए के नोट में छपी इस ऐतिहासिक 'रानी की वाव' में हर स्तर पर स्तंभों से बना हुआ एक गलियारा है, जो कि वहां के दोनों तरफ की दीवारों को जोड़ता है।

वहीं इस आर्कषक गलियारे में खड़े होकर रानी की वाव की अद्‌भुत सीढ़ियों का नजारा ले सकते हैं। अपने प्रकार की इस इकलौती बावड़ी को कलश के आकार में ढाल दिया है। इस अद्‌भुत बावड़ी की दीवारों पर बने ज्यामितीय और रेखाचित्र देखते ही बनते हैं।

रानी की वाव का गहरा कुंआ

गुजरात में सरस्वती नदी के तट के किनारे स्थित विश्व प्रसिद्ध रानी की वाव के सबसे अंतिम स्तर पर एक गहरा कुआं है, जिसे ऊपर से भी देखा जा सकता है। इस कुएं के अंदर गहराई तक जाने के लिए सीढ़ियां निर्मित की गई हैं, लेकिन अगर इसे ऊपर से नीचे की तरफ देखते हैं तो यह दीवारों से बाहर निकले हुए कुछ कोष्ठ की तरह नजर आते हैं, जिनका पहले कभी किसी तरह की वस्तु आदि रखने के लिए उपयोग किया जाता था।

इस अनूठी बावड़ी की सबसे खास बात यह है कि इस वाव के गहरे कुएं में अंदर तक जाने पर शेष शैय्या पर लेटे हुए भगवान विष्णु की अद्‌भूत मूर्ति देखने को मिलती है, जिसे देखकर यहां आने वाले पर्यटक अभिभूत हो जाते हैं एवं इसे धार्मिक आस्था से भी जोड़कर देखा जाता है।

विश्व ऐतिहासिक धरोहर के रूप में रानी की वाव

सात मंजिला इस ऐतिहासिक और विशाल बावड़ी को इसकी अनूठी शिल्पकारी, अद्‌भुत बनावट एवं इसकी भव्यता के साथ भूमिगत जल के उपयोग एवं बेहतरीन जल प्रबंधन कि व्यवस्था के चलते वर्ल्ड हेरिटेज साइट यूनेस्को ने साल 2014 में इसे विश्व धरोहर की लिस्ट में शामिल किया है।

रानी की वाव से जुड़े कुछ रोचक तथ्य

गुजरात के पाटन में स्थित यह ऐतिहासिक बावड़ी 'रानी की वाव' दुनिया की ऐसी इकलौती बावड़ी है, जिसे अपनी अद्‌भुत संरचना और अनोखी बनावट एवं ऐतिहासिक महत्व के चलते वर्ल्ड हेरिटेज साइट में शामिल किया गया था। यही नहीं विश्व प्रसिद्ध यह बावड़ी इस बात का भी प्रमाण है कि प्राचीन भारत में जल प्रबंधन प्रणाली कितनी बेहतरीन और शानदार थी।

प्रेम का प्रतीक मानी जाने वाली इस विशाल बावड़ी का निर्माण करीब 10-11वीं सदी में सोलंकी राजवंश की रानी उदयमती ने अपने स्वर्गवासी पति भीमदेव सोलंकी (सोलंकी राजवंश के संस्थापक) की याद में करवाया था।

सरस्वती नदी के तट पर स्थित इस बावड़ी के बारे में यह भी कहा जाता है कि कई सालों तक बाढ़ की वजह से यह बावड़ी धीमे-धीमे कीचड़, रेत और मिट्टी के मलबे में दबती चली गई और फिर 80 के दशक के अंतिम सालों में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (ASI) ने इस जगह की खुदाई की और यह बावड़ी पूरी दुनिया के सामने आई। इसकी खास बात यह रही कि कई वर्षों तक मलबे में दबे रहने के बावजूद भी इस भव्य रानी की वाव की मूर्तियां, शिल्पकारी बेहतर स्थिति में मिले।

मारु-गुर्जर स्थापत्य शैली में बनी यह बावड़ी करीब

64 मीटर ऊंची, 20 मीटर चौड़ी और करीब 27 मीटर गहरी है, जो कि करीब 6 एकड़ के क्षेत्रफल में फैली हुई है। यह अपने प्रकार की सबसे विशाल और भव्य संरचनाओं में से एक है।

यह विश्वप्रसिद्ध सीढ़ीनुमा बावड़ी के नीचे एक छोटा सा गेट भी है, जिसके अंदर करीब 30 किलोमीटर लंबी एक सुरंग बनी हुई है, जो कि पाटण के सिद्धपुर में जाकर खुलती है। ऐसा माना जाता है कि यह रहस्यमयी सुरंग पाटन के सिद्धपुर में जाकर खुलती है। पहले इस खुफिया रास्ते का इस्तेमाल राजा और उसका परिवार युद्ध एवं कठिन परिस्थिति में करते थे। फिलहाल अब इस सुरंग को मिट्टी और पत्थरों से बंद कर दिया गया है।

अपनी अनूठी संरचना और अद्भुत बनावट के लिए पूरे विश्व भर में प्रसिद्ध गुजरात की यह बावड़ी भूमिगत जल संसाधन एवं भंडारण प्रणाली का एक उत्कृष्ट नमूना है।

विश्व प्रसिद्ध रानी की वाव के बारे में सबसे ऐतिहासिक और रोचक तथ्य यह है करीब 50-60 साल पहले इस बावड़ी के आसपास तमाम तरह के आयुर्वेदिक पौधे थे, जिसकी वजह से रानी की वाव में एकत्रित पानी को बुखार, वायरल रोग आदि के इलाज में काफी अच्छा माना जाता था। वहीं इस बावड़ी के बारे में यह मान्यता भी है कि इस पानी से नहाने पर बीमारियां नहीं फैलती हैं।

गुजरात के पाटन में स्थित इस अनूठी बावड़ी को इसकी अद्भुत बनावट और भव्यता की वजह से 22 जून, साल 2014 में यूनेस्कों ने विश्व धरोहर की लिस्ट में शामिल किया है।

11 वीं सदी की वास्तुशैली की इस उत्कृष्ट ऐतिहासिक कृति के अंदर भगवान विष्णु से संबंधित बहुत सारी कलाकृतियां और सुंदर मूर्तियां बनी हुई हैं। यहां पर भगवान विष्णु के दशावतार के रूप में कई मूर्तियां बनी हुई हैं, जिनमें से मुख्य रूप से नरसिम्हा, कल्कि राम, वामन, कृष्णा वाराही और दूसरे मुख्य अवतार भी शामिल हैं। इसके अलावा इस भव्य बावड़ी में माँ दुर्गा, लक्ष्मी, भगवान गणेश, शिव, ब्रह्मा जी, सूर्य समेत कई देवी-देवताओं की मूर्तियां बनी हुई हैं।

गुजरात में स्थित रानी की वाव में 500 से भी ज्यादा विशाल मूर्तियां और करीब एक हजार से ज्यादा छोटी मूर्तियां पत्थरों पर बेहद शानदार ढंग से उकेरी गई हैं। इस बावड़ी की दीवारों और खंभों की शिल्पकारी और नक्काशी यहां आने वाले पर्यटकों को अपनी तरफ लुभाती है।

7 मंजिल की इस बावड़ी का चौथा तल सबसे गहरा बना हुआ है, जिसमें से एक 9.4 मीटर से 9.5 मीटर के आयताकार टैंक तक जाता है।

विश्व धरोहर की लिस्ट में शामिल यह अनूठी बावड़ी में भारतीय महिला के परंपरागत सोलह श्रृंगार को भी मूर्तियों के जरिए बेहद शानदार तरीके से प्रदर्शित किया गया है।

अपनी अनूठी मूर्तिकला के लिए विश्व भर में विख्यात इस अद्भुत बावड़ी में 11वीं और 12वीं सदी में बनी दो मूर्तियां भी चोरी कर ली गई थीं, इनमें से एक मूर्ति गणपति और दूसरी ब्रह्म-ब्रह्माणि की थीं।

इस सात मंजिली सीढ़ीनुमा बावड़ी मुख्य रूप से पीने के पानी के उचित प्रबंध के लिए बनवाई गई थी, हालांकि इसके निर्माण के पीछे कई लोक कथाएं भी प्रचलित हैं, जिनमें से एक कथा के मुताबिक, रानी उदयमति ने इस विशाल बावड़ी का निर्माण इसीलिए करवाया क्योंकि वे जरूरतमंद लोगों को पानी पिलाकर पुण्य-धर्म कमाना चाहती थीं।

सात मंजिला इस अनूठी बावड़ी में पहले सीढ़ीयों की कतारों की संख्या 7 हुआ करती थीं, जिसमें से अब 2 गायब हो चुकी हैं।

इस ऐतिहासिक बावड़ी की देखरेख का जिम्मा भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का है। यह भव्य रानी की वाव गुजरात के भूकंप वाले क्षेत्र में स्थित है, इसलिए भारतीय पुरातत्व को इसके आपदा प्रबंधन को लेकर हर समय सतर्क रहना पड़ता है।

अपनी कलाकृति के लिए मशहूर इस विशाल ऐतिहासिक बावड़ी को साल 2016 में दिल्ली में हुई इंडियन सेनीटेशन कॉन्फ्रेंस में "क्लीनेस्ट आइकोनिक प्लेस" पुरस्कार से नवाजा गया है।

साल 2016 में भारतीय स्वच्छता सम्मेलन में गुजरात के पाटन में स्थित इस भव्य रानी की वाव को भारत का सबसे स्वच्छ एवं प्रतिष्ठित स्थान का भी दर्जा मिला था।

जल संग्रह प्रणाली के इस नायाब नमूने रानी की वाव को जुलाई, 2018 में भारतीय रिजर्व बैंक ने अपने नए 100 रुपए के नोट पर प्रिंट किया है।

(स्त्रोत- विविध)

तारक मेहता की उल्टी बैलेंस शीट

रजनीकांत
वरिष्ठ प्रबंधक
मिड कॉर्पोरेट
कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

गोकुलधाम सोसाइटी (इंड-एस) में कई सारे अपार्टमेंट (फाइनेंसिअल फॉर्मेट) हैं। ये अपार्टमेंट अलग अलग तरह (टाइप्स ऑफ फॉर्मेट्स) के हैं। इन कई तरह के अपार्टमेंट्स में से एक अपार्टमेंट है, 2 फ्लोर (बेलेंस-शीट) का।

फर्स्ट फ्लोर पर रहते है, अपने जेठा लाल और दया बेन। सेंकण्ड फ्लोर पर अपने अय्यर भाई साहब और उनकी वाइफ बबीता जी। हर फ्लोर पर सिर्फ दो ही कमरे है, एक लेफ्ट में, एक राइट में। अय्यर भाई एक कंपनी में प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक की जॉब करते है। वहीं जेठा लाल का अपना खुद का बिजनेस है।

छत
जेठा लाल का परिवार
अय्यर जी का परिवार

दया बेन और बबीता जी ने अपने अपने हस्बैंड को साफ साफ बोल रखा है कि "वाइफ इज आलवेज राइट" इसलिए वे दोनों अपने अपने फ्लोर के राइट वाले रूम में ही रहेगी और जेठालाल और अय्यर जी को अपने-अपने फ्लोर के लेफ्ट रूम में ही रहना होगा।

छत	
जेठा लाल	दया बेन
अय्यर जी	बबीता जी

जेठालाल और अय्यर भाई अपने-अपने परिवार के लिए कमाई के सोर्स थे, लेकिन जब कभी-भी वे दोनों अपने ससुराल (पब्लिक) में जाते तो ससुराल के लोग उन्हें अपने ऊपर बोझ की तरह देखते थे और उन्हें लायबिलिटी कहते थे।

लाइबिलिटी	
जेठा लाल	दया बेन
अय्यर जी	बबीता जी

वही दया बेन और बबीता जी को उनके परिवार के लोग एसेट समझते थे क्योंकि वे दोनों अपने-अपने पतियों के पैसों को सोच-समझ कर इस्तेमाल किया करती थी।

लाइबिलिटी	एसेट
जेठा लाल	दया बेन
अय्यर जी	बबीता जी

अपने जेठालाल, जो असल में अपने परिवार के लिए इनकम के सोर्स है, अपने फ्यूचर यानी लॉन्ग टर्म -12 महीने से ज्यादा की सोच से बिजनेस करते हैं और पैसा बनाते हैं और अपनी वाइफ दयाबेन को इस्तेमाल करने के लिए दे देते हैं। उनकी वाइफ दयाबेन भी अपने पति की सोच का सम्मान करते हुए, लॉन्ग टर्म का सोच कर पैसे खर्च करती है और लॉन्ग टर्म एसेट बनाती है और अपना घर चलाती क्योंकि उनके 2 बच्चे ग्रोथ और एक्सपाँशन भी है।

लाइबिलिटी	एसेट
जेठा लाल लॉन्ग टर्म - 12 महीने से ज्यादा की सोच के बिजनेस करते हैं और पैसा बनाते हैं	दया बेन लॉन्ग टर्म का सोचकर के पैसे खर्च करती है
अय्यर जी	बबीता जी

वहीं अपने अय्यर भाई, जॉब करते हैं और फ्यूचर की सोचते ही नही थे। वह आज की सोच यानी शार्ट टर्म (12 महीने से कम) की सोच कर पैसे बनाते हैं और अपनी वाइफ बबीता जी को इस्तेमाल करने के लिए दे देते हैं। बबीता जी भी अपने पति की ही तरह सोच रखती हैं और वह भी शार्ट टर्म का सोच कर पैसे खर्च करती हैं और शोर्ट टर्म एसेट बनाती हैं और अपना घर चलाती।

लाइबिलिटी	एसेट
जेठा लाल - लॉन्ग टर्म - 12 महीने से ज्यादा की सोच के बिजनेस करते हैं और पैसा बनाते हैं	**दया बेन**- लॉन्ग टर्म का सोच के पैसे खर्च करती हैं
अय्यर जी - शार्ट टर्म यानी 12 महीने से कम की सोच के पैसे बनाते हैं	**बबीता जी** - शार्ट टर्म का सोच के पैसे खर्च करती हैं

बबीता जी और अय्यर भाई दोनों की नई नई शादी हुई है। दोनों एक दूसरे को नाम से नही पुकारते हैं और एक दूसरे को बुलाने का नया नाम रखा है। अय्यर भाई साहब बबीता जी को चार्मिंग लेड़ी (CL) कह कर बुलाते हैं। वही बबीता जी अपने पति को जिन्होंने एकाउंटेंसी की पढ़ाई की हुई थी, उन्हें (CA बाबू) कह कर बुलाती हैं।

जब जब बबीता जी, अय्यरजी को CA कह कर बुलाती थी, तब-तब अय्यर भाई उन्हें CL कह कर पुकारते यानि दोनों तरफ प्यार बराबर था।

लाइबिलिटी	एसेट
जेठा लाल - लॉन्ग टर्म - 12 महीने से ज्यादा की सोच के बिजनेस करते हैं और पैसा बनाते हैं।	**दया बेन** - लॉन्ग टर्म का सोच के पैसे खर्च करती हैं।
अय्यर जी - शार्ट टर्म यानी 12 महीने से कम की सोच के पैसे बनाते हैं। यह बुलाते है चार्मिंग लेडी (CL)।	**बबीता जी** - शार्ट टर्म का सोच के पैसे खर्च करती हैं। यह बुलाती हैं CA बाबू।

अय्यर भाई और बबीता जी दोनों हर मुद्दे पर एक जैसी ही सोच रखते थे। कोई अगर दिन को रात कहता तो दूसरा भी दिन को रात कहता। मतलब दोनों का स्कोर बराबर चलता था।

यानी CA = CL

लाइबिलिटी	एसेट
जेठा लाल - लॉन्ग टर्म -सोर्स	**दया बेन** - लॉन्ग टर्म - यूज
अय्यर जी - शोर्ट टर्म-सोर्स (CL)	**बबीता जी** - शॉर्ट टर्म - यूज (CA)

अभी तक तो सब ठीक चल रहा था। दोनों जितना कमाते उनकी पत्नियां उतना ही खर्च करती थी, न एक रुपया अधिक न एक रुपया कम और इस तरह सभी अपनी कमाई के पैसे से, हँसी खुशी घर चला रहे थे।

लाइबिलिटी	एसेट
लॉन्ग टर्म - सोर्स	लॉन्ग टर्म यूज
शॉर्ट टर्म-सोर्स (CL)	शॉर्ट टर्म यूज (CA)

समय के साथ सब कुछ सही चल रहा था सभी लोग खुश थे पर वो कहते हैं न अगर कुछ सही चलता रहे तो लोग बोर हो जाते हैं.... तब सोचते हैं कि चलो कुछ तूफानी करते हैं.... कुछ ऐसा ही तूफानी अय्यर भाई ने भी किया ...

उनको लगा कि उनको भी लांग टर्म की सोच से पैसों की प्लानिंग करनी चाहिए....पर उनकी सैलरी तो फिक्स्ड ही आती थी। तब अय्यर भाई ने सोचा, क्यों ना अपनी फिक्स्ड आमदनी में से ही, कुछ पैसे निकाल कर दयाबेन को दे दिए जाएं जो लॉन्ग टर्म असेट में पैसे लगाती है।

अय्यर भाई अपने फिक्स्ड इनकम में से ही चोरी छिपे पैसे निकाल कर दयाबेन को देने लगे। जिससे बबीता जी को घर चलाना मुश्किल होने लगा। बबीता जी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। उन्हें जो पैसे अय्यर से मिलते थे, उससे उनका घर चलाना मुश्किल हो रहा था।

कुछ दिनों तो ऐसा ही चला। एक दिन बबीता जी को अय्यर पर कुछ शक हुआ कि दाल में कुछ काला जरूर है। हुआ यह कि अय्यर अपनी गलती को छिपाने के लिए बबीता जी को हर बार चार्मिंग लेडी - चार्मिंग लेडी कह कर बुलाने लगे। बबीता जी ने नोटिस किया कि जितने बार वह अय्यर को CA कह कर बुलाती थी। उससे ज्यादा बार अय्यर उसे CL कह कर बुलाते थे। यानी अब CA की संख्या कम थी और CL की संख्या ज्यादा। दूसरे शब्दों में बोले तो $CA < CL$ और $CA / CL < 1$

इससे बबीता जी को शक हुआ, जब इस शक के आधार पर बबीता जी अय्यर से झगड़ने लगी और बोली की सच-सच बताओ नहीं तो मैं सब कुछ छोड़ कर मायके चली जाउंगी।

अपने अय्यर भाई को तो खाना बनाना भी नहीं आता था, तो उन्होंने सोचा कि अगर बबीता जी घर छोड़कर चली गई तो उनका गुजारा कैसे होगा?

यह सोचकर अय्यर भाई ने अपनी गलती मानते हुए, उन्हें सब कुछ सच-सच बता दिया और अब से सारे पैसे बबीता जी को ही देने का वादा किया और कुछ तूफानी करने की सोच को ठंडे बस्ते में डाल दिया।

लाइबिलिटी	एसेट
जेठा लाल - लॉन्ग टर्म सोर्स	**दया बेन** - लॉन्ग टर्म यूज
अय्यर जी - शॉर्ट टर्म सोर्स (सीएल)	**बबीता जी** - शॉर्ट टर्म यूज (सीए)

कुछ समय के बाद परिस्थिति फिर पलटी। किसी कारणवश अपने अय्यर भाई की इनकम कम हो गई। पर बबीता जी को घर चलाने के लिए बराबर पैसे चाहिए होते थे। इसी चिंता में उन्होने बबीता जी को चार्मिंग लेडी कहना कम कर दिया।

बबीता जी को इस पर भी शक हुआ। उन्होंने पिछली बार की तरह फिर कैलकुलेशन किया। इस बार वो अय्यर को जितनी बार सीए बाबु कह कर पुकारती, तो अय्यर की ओर से सीएल नाम से पुकारने की आवाज कम आने लगी। यानी $CA > CL$ और $CA / CL > 1$

इस बार बबीता जी ने अय्यर भाई से प्यार से बात निकलवाने की कोशिश की और अय्यर ने सारा माजरा सच-सच बता दिया।

तब फिर बबीता जी ने कहा कि उन्हें इस प्रकार की परिस्थिति का अंदाजा था इसीलिए जब उनकी आमदनी कम हो गई थी तो उन्होंने दया बेन से यह बात शेयर की थी और दया बेन के कहने पर ही जेठालाल ने उनकी परिस्थिति को समझते हुए उनकी मदद भी की थी और जेठा लाल ने अपनी कमाई से कुछ पैसे दिए ताकि जब तक सब कुछ ठीक न हो जाए, उनका घर चलता रहे।

यह सुनकर अय्यर भाई, जेठाभाई से मिल कर उनको धन्यवाद देने पहुँच गए। जेठालाल ने अय्यर भाई को बताया कि उनका बैंकर इंडियन बैंक है, जो आपके घर की जरूरतों के लिए भी आपको लोन दे सकता है।

अय्यर भाई ने जेठालाल से कहा: "मेरे पास तो मार्जिन के लिए कुछ है ही नहीं तो लोन कैसे मिलेगा?"

तब जेठालाल ने बताया, दोस्त किसलिए होते है "मैं हूँ ना ......" मैं भी आपके घर की जरूरतों के लिए कुछ पैसे देता रहूंगा और बैंक, बाकी के पैसे बैंक लोन के रूप में दे देगी।

अय्यर ने फिर जेठालाल से पूछा कि बैंक उनको कितना लोन दे देगी?

तब जेठा लाल ने बताया की जितना आपको कम पड़ रहा होगा, उसका 25% मैं दे दूंगा 75% बैंक दे देगी।

लाइबिलिटी	एसेट
जेठा लाल – लॉन्ग टर्म सोर्स	**दया बेन** – लॉन्ग टर्म यूज
अय्यर जी – शॉर्ट टर्म सोर्स (सीएल)	**बबीता जी** – शॉर्ट टर्म यूज (सीए)

इस तरह जेठालाल की मदद से अय्यर भाई को लोन मिल गया और दोनों के घर अब फिर से पहले के जैसे चलने लगे। बस, अब बबीता जी को अधिक सतर्कता के साथ पैसों का इस्तेमाल करना होता है ताकि बैंक का इंटरेस्ट चुकता किया जा सके।

जेठालाल ने बबीता जी को कह रखा था कि वह हमेशा उनके साथ बने रहेंगे इसीलिए उनके पैसे उन्हें लौटाने की जरूरत नहीं है।

वक्ताओं की ताकत भाषा,
लेखक का अभिमान हैं भाषा।
भाषाओं के शीर्ष पर बैठी,
मेरी प्यारी हिन्दी भाषा।

पिता की सीख

सुश्री शिप्रा सचान
सहायक प्रबंधक
शाखा-गुमटी न. 05, कानपुर

"मेरे कंधों पर है जिम्मेदारियों का पहाड़,
मेरे बच्चे मुझे कभी, बूढ़ा होने नहीं देते...."

अचानक पिता के कमरे की सफाई करते हुए, अभिलाष पिता की मिली हुई डायरी में, ये पंक्तियां पढ़ते हुए भावुक हो गया। अभिलाष के पिता का सात दिन पहले ही निधन हुआ था। अभिलाष अपने पिता के सबसे करीब था। उसके पिता नैतिकता और जिम्मेदारियों का ऐसा व्यक्तित्व थे, जिन्होंने अपने जीवन में कभी भी गम को हावी नहीं होने दिया था। अभिलाष एक छब्बीस वर्ष का, ऊर्जावान नवयुवक था, जो अपने छात्र जीवन में काफी मेधावी था क्योंकि विपन्नता में जो प्रतिभा जागृत होती है उसका प्रभाव अद्वितीय होता है। अभिलाष भी उसी प्रभाव से उपजा हुआ व्यक्तित्व था। पिता अपनी योग्यता के अनुरूप स्थान प्राप्त नहीं कर सके थे, जिसके वह वास्तव में उत्तराधिकारी थे। इसके बावजूद जीविका के तौर पर एक सरकारी बैंक में क्लर्क रहते हुए उन्होंने अभिलाष को हर वह शिक्षा दिलाई जो एक समर्पित पिता अपने बेटे को दिला सकता है। इंजीनियरिंग करने के बाद अभिलाष ने एक प्राइवेट कंपनी में जॉब शुरू कर दी, लेकिन कुछ समय बाद उसका मन वहां नहीं लगा। उसका लक्ष्य प्रशासनिक अधिकारी बनने का था। अत: उसने यह इच्छा अपने पिता को बताई। पिता को बहुत अधिक प्रसन्नता हुई कि जो कार्य और लक्ष्य वह स्वयं न प्राप्त कर सके, वह उनका बेटा पूरा करके दिखाएगा। उन्होंने अविलम्ब अभिलाष को अपनी बैंक में जमाराशि से दिल्ली के मुखर्जी नगर के एक प्रतिष्ठित कोचिंग संस्थान में एडमिशन कराया तथा उसको हर माह पांच हजार रुपए खर्च भी भेजते थे।

एक साल के अन्दर ही मेहनत रंग लाई और अभिलाष का चयन पहले ही प्रयास में उच्च रैंक के साथ हो गया। पिता का आपना सपना, बेटे के रूप में साकार हो गया था। आखिर अभिलाष ने अपने पिता को जीवन का सर्वश्रेष्ठ उपहार दे दिया था। एक ऐसी सफलता पीढ़ियों के जीवन स्तर को बदल देती है, इसलिए घर, परिवार, समाज एवं रिश्तेदार सभी को बहुत खुशी थी। समय बीतता गया और अभिलाष ने परिवीक्षाधीन प्रशासनिक अधिकारी के तौर पर बिहार की एक छोटी सी तहसील में नौकरी प्रारंभ की, लेकिन यह क्या? जैसा सोचा था, वैसा जीवन में होता कहां है? अभिलाष ने पाया कि पिता द्वारा दिए गए संस्कार, उसूल, ईमानदारी, समर्पण और सच्चाई के सबक यहां पर बेकार साबित हो रहे थे। यहां पर भ्रष्टाचार का बोलबाला था, जिसे राजनीतिक संरक्षण मिला हुआ था। कोई ऐसा दिन नहीं होता था, जब अभिलाष को किसी भी नेता से बहस का सामना नहीं करना पड़ता था, क्योंकि वह ईमानदार था। यह तो निश्चित था कि बेईमानों में ईमानदारो से ज्यादा एकता होती है। सब मिलकर अभिलाष को परेशान करते थे। यदि अभिलाष किसी बात को सही रूप में अपने

उच्चाधिकारियों को अवगत कराता था तो उच्चाधिकारी तथा राजनीतिक प्रतिनिधित्व के नेता उससे बुरी तरह लड़ते थे। इन सब से अभिलाष टूट सा गया था। उसने नौकरी छोड़ कर वापस प्राइवेट सेक्टर में जाकर नौकरी करने का मन बना लिया था।

उसी शाम उसने अपने पिता को फोन करके कहा– "पिताजी आपने अपने जीवन का जो भी संघर्ष था, उसे नैतिकता, सच्चाई, ईमानदारी के मूल्य में पिरो कर मुझे सर्वश्रेष्ठ शिक्षा दिलाई, जिसका परिणाम था कि मुझे सफलता मिलती चली गई। मुझे लगा कि दुनिया ऐसी ही होती होगी। सब कुछ अच्छा होता होगा, सारी अच्छी चीजों का मूल्य तुरंत मिल जाता होगा। अच्छा करने के लिए अच्छे लोग होते होंगे। अच्छी परिस्थितियां होती होंगी, अच्छी दिशा होती होगी, अच्छा वातावरण होता होगा। लेकिन मैं गलत था। लोग इतने दूषित हो चुके हैं कि कोरोना जैसी महामारी में इतनी सारी मौतों के बाद भी उन्होंने अपना मूल दानव स्वभाव नहीं छोड़ा है। पैसे की लूट इतनी अधिक है कि इंसान निम्नतम स्तर से भी नीचे जा चुका हैं। कुछ अच्छा कार्य करना एक अपराध–सा हो गया है। किताबों में लिखी हुई बातें जिस समाज में उतर के आती हैं तो समाज आप का सबसे बड़ा दुश्मन साबित होता है। बहुत कोशिश की, लेकिन जो एकता मूल्यों को तोड़ने के लिए है इतनी एकता मूल्यों को बनाए रखने के लिए दिखाई नहीं पड़ती।"

अभिलाष लगभग आधे घंटे तक अपनी बात फोन पर करता रहा पिताजी चुपचाप सुनते रहे उसके बाद उन्होंने एक लंबी सांस ली और बोले – "देखो बेटा! जीवन कभी भी इतना सरल नहीं था जिस दिन से आप जन्म लेते हो उस दिन से संघर्ष शुरू हो जाता है। आपको अच्छा बनना है या बुरा बनना है यह चयन भगवान ने आप पर छोड़ रखा है आप जिस रास्ते का भी चयन करते हो उस रास्ते की गरिमा को बनाए रखना या उस मार्ग में आने वाली वाली कठिनाइयों का सामना करना आपका कर्तव्य हो जाता है। यह बात सही है कि अच्छे लोगों को बहुत कष्ट उठाना पड़ता है, लेकिन दूरगामी परिणाम बहुत आनंददायक होते हैं। अभी तुम्हें प्रतीत हो रहा होगा कि बेईमानों की एकता ईमानदारो की एकता से अधिक है, लेकिन तो भी यह बात भी जानना चाहिए कि बेईमानों की एकता का एक कारण और सिर्फ एक कारण पैसा होता है जबकि ईमानदार बिना कारण अपने मार्ग पर चलते रहते हैं। मैं सिर्फ इतना ही कहूंगा कि तुमने मेरे सपने को साकार किया है। इसके लिए जीवन भर तुम्हारा ऋणी रहूंगा। बाकी जीवन तुम्हारा है तुम्हारा निर्णय है। मैं तुम्हारे हर निर्णय का सम्मान करता हूं, जैसा उचित लगे, करना। बेटा! मैं तुम्हारे साथ हूं और हमेशा साथ रहूंगा।"

अभिलाष की आंखों में आंसू आ गए। अभिलाष को उम्मीद नहीं थी कि पिता इतनी सरलता से उसकी बात को स्वीकार करेंगे उसने उसी रात इस्तीफा लिखा और अपनी फाइल में रखकर कार्यालय आ गया। आज मुख्य सचिव की मीटिंग होनी थी। उसकी तैयारी करने लगा अचानक दोपहर में दो बजे के आसपास माता जी का फोन आया कि – "बेटा जल्दी घर चले आओ! पापा का बी पी काफी बढ़ गया है उन्हें चक्कर आ गया था तो उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया।" अभिलाष ने तुरंत यह बात अधिकारियों को बतायी, लेकिन कार्य के दबाव का हवाला देते हुए उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया। काफी निवेदन करने पर मीटिंग खत्म होने के बाद उन्होंने जाने की अनुमति प्रदान की। अभिलाष ने बुझे मन से, मीटिंग की तैयारी करनी शुरू कर दी। जैसे ही मीटिंग खत्म हुई अभिलाष उड़ कर अपने पिता के पास पहुंच जाना चाहता था। उसकी आंखें आंसुओं से भरी हुई थी। जैसे ही वह अस्पताल पहुंचा। उसे ज्ञात हुआ कि उसके पिता को दिल का दौरा पड़ा है और स्थिति गंभीर है। उसने दिन–रात पिता की सेवा की तथा डॉक्टरों ने भी काफी प्रयास किया, लेकिन उनके शुगर और बीपी की बीमारी के साथ हार्ट अटैक की समस्या ने जीवन पर जीत प्राप्त कर ली। जीवन की साँसे समाप्त हो चुकी थी। अभिलाष से जैसे कोई आसमान छीन लिया गया। उसे एकदम से अपने बड़े होने आभास हुआ। उसे लगा जिस सूरज से मुझे रोशनी मिल रही थी वह सूरज सदा के लिए अस्त हो गया है। उसे वह अपने जीवन में कुछ भी अच्छा होता हुआ महसूस नहीं हो रहा था।

पिता की मृत्यु के बाद उनके क्रियाकर्म करने हेतु उसने पंद्रह दिन का अवकाश ले लिया था। उसने निर्णय कर लिया था कि छुट्टी से लौटने के बाद वह अपनी नौकरी से इस्तीफा दे देगा। उसे वर्तमान परिस्थितियों, राजनीति से ग्रसित नौकरी और घर को उसकी आवश्यकता के मद्देनजर इस्तीफा देना ही ज्यादा उपयुक्त लग रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि यदि वह नौकरी से इस्तीफा दे देगा और एक नई जिंदगी की शुरुआत करेगा तो ज्यादा सहज हो सकेगा वरना इन परिस्थितियों में उसको अपनी स्थिति बिल्कुल वैसे ही लग रही थी जैसे लुढ़कते हुए पत्थर को कोई अपने दोनों हाथों से चोटी पर चढ़ाने का प्रयास कर रहा हो। उसे लग रहा था कि प्राइवेट नौकरी में वो भले पिता के सपनों पूरा ना कर पाए लेकिन पिता के दिखाए गए संस्कार और नीति को वह अवश्य ही अपनी कर्तव्य परायणता के साथ साबित कर सकेगा। इसी उधेड़बुन में पिता की मृत्यु के बाद उनके बैंक संबंधी तथा जमीन संबंधी कार्यों को करने के लिए उसे कुछ दिन का अवकाश किया था। जिस के संबंध में वह कमरे की सफाई कर रहा था।

इसी सफाई के क्रम में उसे पिता की डायरी मिली, इसमें हर वो बात लिखी थी जो वह किसी से नहीं कहते थे ना किसी को महसूस होने देते थे उस तरीके एक पन्ने पर बिल्कुल वैसे ही परिस्थिति का जिक्र था, जैसा वह इस समय महसूस कर रहा था, उसमें लिखा था– एक बार नौकरी के दौरान उन्हें जानबूझकर फंसाया गया। उस समय पूरे घर की जिम्मेदारी उन पर थी। उन्होंने भी निर्णय किया था कि मैं इस्तीफा देकर कोई और कार्य कर लूंगा, लेकिन कुछ समय बाद उन्हें आभास हुआ कि विपत्ति से भागना उचित निर्णय नहीं होता है। आप पद, सरहद या कोई भी जिम्मेदारी बदल कर देख लो, सबसे अच्छा समाधान सिर्फ उसका सामना करना होता है। यह चीज जितनी जल्दी समझ में आ जाए। मनुष्य के जीवन के लिए उतना ही बेहतर होता है। प्रकृति किसी के साथ अन्याय नहीं करती है। यदि आप सही हैं तो आपके साथ न्याय होगा जरूर। चाहे वह आज हो या कुछ समय बाद डायरी के कुछ पन्नों के बाद यह जिक्र था कि जिससे उन्हें फंसाया था। उसे खुद एक बड़े घोटाले में जेल जाना पड़ा। कुछ समय बाद उनके नए कार्यालय प्रमुख स्थानांतरित होकर आये। उनके कार्यालय प्रमुख एक अच्छे व्यक्ति थे, जिन्होंने उनकी बहुत मदद की और उन्हें निर्दोष साबित कराया। कुछ समय बाद उन्हें अच्छे कार्य हेतु प्रधान कार्यालय से प्रशंसा पत्र प्राप्त हुआ।

डायरी में आगे लिखा था कि "जब भी आपको अपनी जिंदगी ऐसी लगने लगे जैसे कि आप एक पहाड़ पर लुढ़कते हुए बड़े से पत्थर को चोटी पर ले जाने का प्रयास कर रहे हैं तो समझ जाइए ईश्वर आपकी परीक्षा ले रहा है। आप अगर उस पत्थर को छोड़कर नीचे भागेंगे तो पत्थर आप को कुचल कर रख देगा बेहतर यह होगा ईश्वर पर भरोसा रख कर पत्थर को चोटी तक धकेल कर ले जाएं। परिस्थितियों का सामना करें। जब आप पत्थर को चोटी के दूसरी तरफ लुढ़का देंगे तो चोटी पर सिर्फ आप और आपकी सफलता होगी और पहाड़ के दोनों तरफ उस पत्थर का नामोनिशान न होगा।" बस जिंदगी ऐसे ही जी जाती है, भाग कर नहीं, बल्कि परिस्थितियों का सामना करके जी जाती है। परिस्थितियों के पत्थर को चोटी के दूसरी तरफ लुढ़का कर ही सफलता मिलेगी। यह जिंदगी में हमेशा याद रखना चाहिए। अविनाश की आंखों से आंसू बह रहे थे। उसे आज ही महसूस हो गया था कि मैं अब इस्तीफा नहीं दूंगा, बल्कि परिस्थितियों के पत्थर को चोटी तक अवश्य ले जाऊँगा। उसने सामना करने का निर्णय कर लिया था। डायरी का खुला हुआ पन्ना उसके आंसूओं से भीग गया था।

प्रकृति, समय और धैर्य – ये तीन सर्वश्रेष्ठ और महान चिकित्सक हैं।

– एच. जी. बौन

आदमजात

संजीव शर्मा
मुख्य प्रबंधक
किसान प्रगति केंद्र
दक्षिण दिल्ली

आज जंगल मे घनघोर शांति छाई थी हवा की सांय सांय और सूखे पत्तों की खरखराहट के अलावा कोई आवाज नहीं सुनाई पड़ रही थी। भोर का समय था गिलहरी पेड़ पर अपने कोटर से बाहर झांक रही थी। उसके चेहरे पर विस्मय ओर डरावना कौतूहल साफ दिखाई दे रहा था। पेड़ पर नजदीकी शाखाओं पर बैठे बंदर अपनी आंखें बंद कर सोने का पाखंड करते दिख रहे थे। कोई भाग दौड़ नही, कोई चीखना चिल्लाना नही। दूर दूर तक आकाश में कोई भी चील कौआ उड़ता हुआ दिखाई नही पड़ रहा था।

पूरी हिम्मत जुटाकर गिलहरी पेड़ से नीचे उतरने लगी। उतरते ही उसकी पहली मुलाकात चूहे से हुई जो अपने परिवार के लिए खाने का प्रबंध करने में जुटा था। गिलहरी ने चूहे से पूछा क्या हुआ है, जंगल में इतना सन्नाटा क्यों फैला हुआ है। चूहा बोला आश्चर्य उसे भी हो रहा है परंतु वह भी कारण नहीं जानता उसने गिलहरी को सुझाव दिया कि चलो आगे चलते हैं शायद कोई और कुछ बताए। दोनों एक साथ आगे चल दिए कुछ ही दूरी पर जंगली सुअर अपनी थूथन से मिट्टी कुरेदता दिखा दोनों ने एक साथ सुअर से पूछा कि आखिर माजरा क्या है? सुअर ने उत्तर दिया उसे भी ज्यादा कुछ पता नहीं है हाँ कल रात को जंगल के राजा ने सभी पशु पक्षियों को अपने अपने घरों में छिपे रहने का आदेश दिया है, इससे ज्यादा वह कुछ नहीं जानता। उसने बताया कि आगे कुछ दूरी पर एक बुढ़ा गधा रहता है चलो उससे पूछते हैं। तीनों एक साथ आगे चले कुछ ही दूरी पर उन्हें बूढ़ा गधा दिखाई पड़ गया जिसे बूढ़े होने के कारण उसके मालिक आदमी ने छोड़ दिया था और वह घूमता हुआ शहर से जंगल में आ गया था तीनों ने बूढ़े गधे से एक साथ सवाल किया "क्या हो गया है हमारे जंगल को? गधे ने गहरी निगाहों से तीनों की ओर देखा और बोला शहर में कोई आपदा आयी हैं पूरी आदम जात अपने घरों में छिपी हैं सड़कें सुनसान ओर खाली पड़ी हैं, वाहन तो क्या कोई आदमी भी बाहर नहीं दिख रहे हैं, इक्का दुक्का आदमी दिखता है तो वह भी मुंह छिपाए हुए हैं। कुछ पता नहीं चल रहा कि आखिर हुआ क्या है? बूढ़े गधे ने सुझाव दिया कि वो पास के सबसे ऊंचे पेड़ पर गिद्ध रहता है चूंकि वह शहर के ऊपर उड़ता रहता है और सबसे ऊंचे पेड़ पर बैठता है तो शायद उसे कुछ पता हो!

अब चारों ऊंचे पेड़ के नीचे पहुंच गए गिद्ध ने ऊपर से उन्हें आते हुए देखा तो वह भी नीची उड़ान भर कर उनके पास आ गया तब चारों ने उससे पूछा कि आप तो शहर के ऊपर उड़ते हो सबसे ऊंचे पेड़ पर बैठते हो आपको अवश्य पता होगा कि शहर में आखिर हुआ क्या है?

गिद्ध ने अपने पंख फड़-फड़ाये ओर कूदकर उनके नजदीक आ गया ओर बोला "शहर में भयंकर आपदा आयी हुई है, पूरी आदम जात डरी हुई है, लोगों ने अपने घरों से निकलना बंद कर दिया है। शहर में सब कुछ शांत क्यों हो गया है, यही जानने के लिए कल रात जंगल के राजा ने अपने मंत्री हाथी के साथ शहर की सीमा का भ्रमण किया था दोनों सीमा लांघकर शहर में काफी अंदर तक चले गए थे। लौटकर समझदार मंत्री हाथी ने राजा को सुझाव दिया कि जिस आदमजात से पूरी प्रकृति डरती है लेकिन आज वही आदमजात डरी हुई है इस का साफ अर्थ है कि कोई विकराल आपदा या तो आ गई है या आने वाली है। जंगल के सभी पशु पक्षियों को अपने अपने घर मे ही रहने का आदेश दिया जाना चाहिए इसलिए कल राजा ने आदेश दिया थे, इसीलिए सभी पशुपक्षी अपने आने घरों में छिपे हुए हैं।

गिलहरी, चूहा, सुअर और बूढ़े गधे ने गिद्ध से अनुरोध किया कि वह और विस्तार से पता लगाएं कि कहीं यह आपदा जंगलों पर तो नही आएगी? गिद्ध ने पूरी जानकारी पता कर सभी को बताने का आग्रह मान लिया और सभी अपने अपने घरों को वापस लौट गए।

सांझ ढले फिर से चारों गिद्ध के निवास वाले पेड़ के नीचे पहुंचे चारों को आया हुआ देखकर गिद्ध भी पेड़ से नीचे उतरा और बताने लगा "शहर में महामारी फैली है जो केवल आदम जात को ही अपना शिकार बना रही है। पूरी आदम जात भयंकर डरी हुई है। शहर में सब कुछ बन्द है। लोगों की जान के साथ साथ खाने पीने के भी लाले पड़े हुए हैं। शहर में घनघोर शांति फैली हुई है। शहर में "गिद्ध ने आगे बताया कि चूंकि महामारी केवल आदम जात को ही ग्रस रही है अभी हम सभी पशु पक्षी सुरक्षित हैं" गिद्ध के इतना कहते ही चारों जानवर अपने अपने घरों की तरफ खुशी मनाते चीखते चिल्लाते हुए कि आदमी मर रहे हैं, जानवर सुरक्षित हैं, दौड़ने लगे चारों की चिल्लाहट सुनकर अन्य पशु पक्षी भी खुशियाँ मनाते हुए उनके पीछे पीछे दौड़ने लगे। जंगल का शांत वातावरण पशु पक्षियों की आवाजों से फिर से गुंजायमान हो गया।

उस दिन से आज तक शहर डरा हुआ है जबकि जंगल में खुशियाँ व्याप्त हैं। पता नही कब हमारा शहर भी फिर से खुशियों से गुंजायमान होकर जंगल की तरह खुशियां मना पायेगा।

प्रतीक्षा

सुश्री शिप्रा सचान
सहायक प्रबंधक
शाखा–गुमटी न. 05, कानपुर

प्रतीक्षारत स्त्रियों ने
प्रथम प्रतीक्षा स्वयं
अपनी माँ के गर्भ से
सुरक्षित बाहर आने की, की!
उससे भी बहुत पहले
'पुत्रीवती भव' कहने वाले
किसी हृदय से निकली
एक शुभेच्छा की!

इन सभी ने सदियों से
स्त्रियों की बनिस्वत
पुरुषों की प्रतीक्षाएं
ही अधिक की हैं!

अपनी प्रतीक्षा के बदले इन पर
उलाहनों के जितने भी वारफेर
न्यौछावर किए गए
ये उन्हें प्रेम और ममता की
मिट्टी से बनी गुल्ल्क में भरती
गई
जिसे दुनिया छोड़कर जाते भी
अपने साथ ही लेकर गई!

घर की दहलीज पर बेचैनी से
प्रतीक्षा करती इनकी आँखें
दिव्य दृष्टि प्राप्त कर ब्रह्मांड के
अंतिम छोर तक देख पाने
और कान तिनके की पदचाप
सुन पा सकने के भी
अभ्यस्त हो जाते हैं!

प्रतीक्षाओं में पगी
इन सभी स्त्रियों की देह बेचैनियों
और आशंकाओं के जेवर पहने
रतजगे और उपवास रख
हर प्रतीक्षा का उत्सव मनाती हैं!

कुछ स्त्रियों की प्रतीक्षाएं
एक ही जनम में
बाकियों की कई दफा
दूसरे जनम में पूरी हो पाती हैं!

स्त्री की प्रतीक्षा करती स्त्री
अक्सर माँ होती है
कई दफा बेटी,
बाकी, 'नसीब'!

प्रतीक्षा करती स्त्रियों की
कभी प्रतीक्षा नहीं की गई!
हरबार, इनकी प्रतीक्षाओं की केवल
समीक्षाएं ही की गईं।

लघुकथा

विरोधाभास

अभिषेक पटेल "अभी"
मुख्य प्रबंधक

"सर आपका एटीएम कार्ड एक्सपायर हो गया है" पैंटालून के कैश काउंटर पर बैठे व्यक्ति ने, रमन से कहा।

"मेरे पास और कोई कार्ड भी नहीं है और इस समय कैश भी नही है। क्या कोई और विकल्प है जिसके माध्यम से मैं भुगतान कर सकता हूँ।"

"सर आपका बिल क्रेडिट कार्ड जारी करके भी किया जा सकता है। उसका 2 प्रतिशत अधिक आपके बिल में जुड़ जाएगा।" काउंटर पर बैठे व्यक्ति ने रमन को उपाय सुझाते हुए कहा।

रमन के पास कोई विकल्प नही था। उसकी इच्छा नही थी फिर भी उसने क्रेडिट कार्ड लेकर पेमेंट करवा दिया।

मन ही मन सोचता रहा – इतने बड़े मॉल में एक तो नौ की लकड़ी, नब्बे खर्च। ऊपर से कोई मोलभाव भी नहीं। क्रेडिट कार्ड अलग से दे दिया, जिसका ब्याज दिन दूना रात चौगुना बढ़ेगा। तभी उसे सामने से आता रिक्शा वाला दिखा। उसने कहा – "कल्याणपुर चलोगे।"

हां बाबूजी, तीस रुपये किराया लगेगा बाबूजी। "रिक्शेवाले ने आशा भरी नजरों से रमन को देखकर कहा।"

"तीस रुपये ! लूट मचा रखी है।" रमन ऐसे चिल्लाया, जैसे किसी ने उसे जोर से मार दिया हो।

"बाबूजी! हम पेट्रोल नही, पसीने से रिक्शा चलाते हैं, आखिर इन्हीं रुपये से हम सिर्फ अपना पेट ही भर पाते है। आप बीस रूपए ही दे दो, लेकिन हम नाजायज नही मांग रहे है।" रिक्शेवाले ने नम्रता पूर्वक कहा।

"हाँ... हाँ ...ठीक है बीस रुपये ले लेना।" कह कर रमन सामान सहित रिक्शे में बैठ गया, लेकिन अपराधबोध से ग्रसित उसके मन मे द्वंद चलता रहा कि भौतिकता की 'बेड़िया' हमारे मूल रूप को भी अभिनय में ढाल देती है और हम उसे एक जीवन स्तर के रूप में स्वीकार कर लेते है, जबकि मन नही मानता, लेकिन विपन्नता या असंगठित क्षेत्र से मोलभाव करना हमें अपने वाक चातुर्य का आवरण ढकने में मदद करता है।

"बाबूजी, कल्याणपुर आ गया। आप बताइए, कहाँ छोड़ना है।" अचानक रिक्शेवाले की आवाज से रमन की विचार तंद्रा टूटी। उसने उतर कर रिक्शेवाले को ध्यान से देखा और एक पचास का नोट उसे देकर सड़क के एक ओर जाने लगा। उसे रिक्शेवाले ने कई आवाजें दी कि "बाबूजी तीस रुपये ले लीजिये।" लेकिन उसे अनसुना करके चलते जाने में एक गहरी शांति मिल रही थी।

पलंग

अभिषेक पटेल "अभी"
मुख्य प्रबंधक
क्षेत्र महाप्रबंधक कार्यालय,
कोयंबत्तूर

"पिताजी! ये बेढब सा जो पलंग है आपका, दीवान-ए-खास जैसा कितना पुराने फैशन का है, कितनी जगह घेरता है, कमरे की"? विपुल ने तंज कसते हुए कहा।

रामनाथ शर्मा अपने बेटे के तंज पर मुस्कुराएँ और बोले "बेटा यह पलंग आपके नाना जी ने बड़ी शिद्दत से शीशम की लकड़ी से छः माह तक कारीगरों से बनवाया था। आपकी माँ को शादी में भेंट करने के लिए। इतनी महत्वपूर्ण गृहस्थी को हटाने का भी मन नही करता।"

विपुल, पिताजी की बात पर जोर से हंसा और बोला– "पिताजी अब इतने सारे विकल्प है। आप कहाँ पुराने ढर्रे पर चल रहे है, कुछ तो नये जमाने के साथ चलिए। ये तो गृहस्थी है, मैंने तो अनु से तलाक इसीलिए लिया था क्योंकि हमें पता था कि हमारी सोच में अंतर है, तो नए जमाने के हिसाब से हमने अलग होने का फैसला कर लिया। आप एक पलंग से इतना जुड़ाव रख रहे है, वो भी इतना पुराना! प्लीज चेंज योर माइंड सेट।

पिताजी चुपचाप सारी बात सुनते रहे फिर उन्होंने विपुल के सर पर हाथ रख कर सहलाया और कहा– "बेटा पता है, पुराने पलंग और आज के डबल बेड में क्या अंतर है?"

"सुनो, बेटा विपुल, पुराना पलंग एक मजबूत शीशम लकड़ी को तराश कर सुंदरता से युक्त बनाया जाता था, जिसके बीच में कहीं दरार नही होती थी। इसका असर रिश्तों पर भी दिखता था वो भी मजबूत, सुंदर और दरार से मुक्त होते थे। अब स्थिति दूसरी है। अब आने वाले डबल बेड में पहले से दो प्लाई के बीच दरार होती है जिसे गद्दे और चादर से ढक दिया जाता है, लेकिन वक्त बीतने पर यही दरार रिश्तों में समा जाती है और रिश्ता कमजोर लकड़ी की तरह सिर्फ बाह्य सुंदरता पर ही टिका रहता है। तुम्हारी माँ और मैने बहुत संघर्ष किया, लेकिन साथ मिलकर, उसी का परिणाम है कि हम कभी एक दूसरे के बिना एक दिन भी नहीं रहे। यदि आज के जमाने के साथ चले होते तो कहने को कितने पास होते, लेकिन कितने दूर है यह इस नए जमाने को पता चल जाता।"

विपुल अब अपने अवचेतन विचार में नए जमाने के पूर्वाग्रह से बाहर निकल चुका था।

प्रेरणा

राजा साव
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)
अंचल कार्यालय, अमृतसर

राह न देख मुसाफिर,
आ कहीं दूर चले हम।

बादलों की चमचमाहट को फिर से ओढ़,
क्यों सोचते हो इतना।

कर्म का फल पाया है कौन!
कहने की बातें हैं बस।

भला सदा साथ निभा पाया है कौन!
न रह तू मौन।

पूछे कोई है तू कौन?
बस चलता जा, पग धरता ता।

राह नई तू गढ़ता जा,
धर्म कहता जो वो करता जा।

बवंडर सा तू बहता जा,
क्या कहता है तेरा मन।

धारा की तरह तू निरंतर बह,

या पवन की तरह तू शील बन।

पीत बन, जगजीत बन,
हित करे जो वह मीत बन।

तू श्याम बन, बलवान बन,
तोड़े जो पिनाकी वो राम बन।

क्या बनना है यह सोचना क्या,
मूक, बधिर को दबोचना क्या।

इससे भी बड़ी चाह हो तो,
दधीचि की तरह महादानी, महावीर बन।

बन सकता है क्या,
धारा की तरह राह गढ़ सकता है क्या?

तो सुन फिर एक और वचन,
चाह नहीं अब राह देख।

स्वप्न स्वर्णिम प्रवाह देख,
जीवन अनंत, अथाह देख।

अंधक की तरह न अंधकार देख,
असीम गगन में आशा और अवसर का अंबार देख।

अगर है तुझमें कोई दिव्यता,
जिसे किसी का प्यार न मिला।

उसके अंतर्मन का प्यार देख,
आँखों के लालसा के पार देख।

पर न देख सिर्फ और करता जा,
नई परंपराएँ गढ़ता जा।

जीवन अमृत पीता जा,
मदमस्त जीवन जीता जा।

पनाह दे, गोवर्धन बन,
अर्पित कर अपना तन-मन।

गांडीव से निकला तीर बन,
सारंग की तू तूणीर बन।

उर्मिला

राजेश कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक, मासंप्र
कॉर्पोरेट कार्यालय, चेन्नै

विरह वेदना में सखी,
हम कुछ भी ना कह पाते हैं।

आज भी उस पथ पे हैं खड़े,
जहाँ वो कह गए हम आते हैं।

अपनों के अंजाने नगर में,
ढूँढे प्रीतम जो न आए नजर में।

नैनों से निकली भीगी डगर में,
ये रैना संग अश्क बहाते हैं।

आज भी उस राह खड़ी सखी,
जहाँ प्रीतम कह गए हम आते हैं।

उनके प्रण का रखती मान मैं,
उनके वचन का करती सम्मान मैं।

कुछ पूछा ना, थी इतनी नादान मैं,
सूने-सूने सावन में, मेघा भर जब जाते हैं।

हर पल मे बस चाह लिए,
वह कह गए हम आते हैं।

रस्ता ताके, नैन मेरे,
जो कह के गए हैं चैन मेरे,
ना चैन कहीं, अब पाते हैं।

सखी तकते मन बेचैन मेरे,
जो कह गए वो हम आते हैं।

न जाने खाया होगा कि नहीं,
नींदों में सोया होगा कि नहीं।

मैं मखमल की चादर पे यहाँ,
वहाँ उनके तन पे कुछ होगा कि नहीं।

महलों के यह दीप मुझे,
अब एक पल न सुहाते है।

रह रह के ताके उस रास्ते को,
जिस राह कह गए वह आते हैं।

वनवास में वो जो चले गए,
अध्याय वो जिनमें सब कहे गए।

मेरा एक पन्ना भी नहीं,
जहाँ पीर हिया की सहे गए।

विरह वेदना को सखी,
अब हम और न सह पाते हैं।

वो आएंगे तो इतना ही उनसे पूछेंगे हम,
तुम क्यों कह गए हम आते हैं।

वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार के तत्वावधान में इंडियन बैंक द्वारा नराकास (बैंक/वित्तीय संस्थान), चेन्नै के सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों एवं राजभाषा अधिकारियों हेतु दिनांक 23.12.2021 एवं 24.12.2021 को दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन।

कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षण पुस्तिका 'प्रशिक्षण-दर्शिका' का विमोचन

कार्यशाला में उपस्थित मुख्य अतिथियों एवं प्रतिभागियों का समूह चित्र

आज़ादी का अमृत महोत्सव

इंडियन बैंक Indian Bank
इलाहाबाद ALLAHABAD
आपका अपना बैंक, हर कदम आपके साथ
YOUR OWN BANK, ALWAYS WITH YOU.

बैंकिंग में क्रांतिकारी परिवर्तन राष्ट्र की सेवा में तत्पर

आइए, इंडियन बैंक के साथ मनाएँ आजादी का अमृत महोत्सव

अखिल भारतीय नेटवर्क। विस्तृत सेवाएँ। सुखद अनुभव

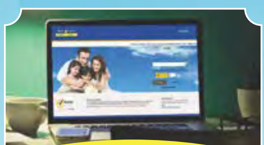
इंटरनेट बैंकिंग

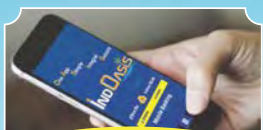
मोबाइल बैंकिंग (इंडओएसिस)

पीओएस

भीम आधार

फास्टैग

मुद्रण दिनांक : 04.04.2022

कॉर्पोरेट कार्यालय: 254-260, अव्वै षण्मुगम सालै, रायपेट्टा, चेन्नै - 600 014

1800 425 000 00 www.indianbank.in हमें फॉलो करें: